प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्याय
तीन

प्रमुख विषयवस्तुएं

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमारा लक्ष्य संसारभर के हजारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसारभर के सैंकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1

पवित्र आत्मा 1

- पिन्तेकुस्त से पहले 2
  - समय 2
  - उद्देश्य 4
- पिन्तेकुस्त का दिन 5
  - विशेषता 5
  - अन्य भाषाएँ 7
  - परिणाम 9
- पिन्तेकुस्त के बाद 10
  - सामरिया 10
  - कैसरिया 11
  - इफिसुस 12

प्रेरित 13

- अद्वितीय 14
  - शर्तें 14
  - नींव का समय 15
- अधिकारिक 16
  - कार्य 16
  - आशीष 17
  - आश्चर्यकर्म 18
  - प्रकाशन 19
- विविधतायें 19
  - रणनीतियाँ 19
  - ढाँचे 21

कलीसिया 22

- आवश्यकता 23
  - भौतिक सीमायें 23
  - लौकिक सीमायें 23

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तैयारी 24
शिक्षायें 24
अधिकारीगण 25
कठिनाइयाँ 27
सारांश 29

परिचय

जो कोई भी उन माता पिता के आसपास रहा हो जिनके पास छोटे बच्चे हैं वह यह जानता है कि माता पिता को अक्सर अपने निर्देश कई बार दोहराने पड़ते हैं। माता पिता अपने बच्चों को एक ही विचार इसलिए दोहराते रहते हैं ताकि वे उन्हें परिपक्व और उपयोगी जीवन जीने के लिए तैयार करने में मदद दे सकें।

बिल्कुल इसी तरह से, जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो यह शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता है कि लूका ने कुछ विषयों को कई बार सम्बोधित किया है। ये दोहराए गए अभिप्राय पूरी पुस्तक में चलते हैं और लूका के शिक्षण को समझने के लिए महत्वपूर्ण कुंजी हैं। इस लिए क्योंकि यह हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक के महत्व की समझ को प्राप्त करने की आशा देते हैं, इसलिए हमें इन दोहराए जाने वाले विषयों के ऊपर सावधानी से ध्यान देना चाहिए।

यह प्रेरितों के काम की पुस्तक की हमारी श्रृंखला का तीसरा अध्याय है, और हमने इस अध्याय का शीर्षक "प्रमुख विषय" रखा है। इस अध्याय में, हम तीन प्रमुख अवधारणाओं को देखेंगे जिन्हें लूका ने समय समय पर और बारी बारी सम्बोधित किया है जब वह बिना किसी बाधा के परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के फैलाव को आरम्भ की कलीसिया में खोल रहा था।

पहले के अध्याय में हमने लूका द्वारा प्रेरितों के काम की पुस्तक के उद्देश्य को यह कहते हुए सारांशित किया कि उसने सुसमाचार संदेश के गतिशील प्रभाव के बारे में एक ऐतिहासिक लेख को लिखा। जैसा कि हमने पहले देखा है कि, लूका ने पवित्र आत्मा के माध्यम से मसीह के निरन्तर चलते रहने वाले काम की विश्वसनीय गवाही के रूप में इतिहास के तथ्यों का वर्णन किया है। इस अध्याय में इस उद्देश्य को और ज्यादा गहराई से लूका के कुछ प्रमुख विषयों को देखते हुए हम करेंगे जिनका प्रयोग लूका ने इस मुख्य विचार के वर्णन और समर्थन के लिए किया है।

हम तीन प्रमुख विषयों के बारे में पता लगाएंगे जिन्हें प्ररितों के काम की पुस्तक को खुलते हुए ही परिचित कराया गया है और इसके सभी अध्यायों में इनका विकास किया गया है। पहला, हम पवित्र आत्मा के विषय के ऊपर देखेंगे, जिसने मसीह के राज्य के विस्तार के लिए कलीसिया को सशक्त किया। दूसरा, हम प्रेरितों पर ध्यान देंगे, ऐसे लोग जिन्हें मसीह की गवाही देने के लिए और नेतृत्व करने के लिए और मसीह की कलीसिया की सेवा करने के लिए अधिकृत किया गया था। और तीसरा, हम कलीसिया के विषय पर विचार करेंगे जिसे प्रेरितों ने यह सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया था कि सुसमाचार और राज्य पूरे इतिहास में फैलता रहे। आइए सबसे पहले प्रेरितों के काम की पुस्तक में पवित्र आत्मा और उसकी भूमिका की ओर ध्यान दें।

पवित्र आत्मा

प्रेरितों के काम की पुस्तक पवित्र आत्मा के ऊपर गहरे धर्मविज्ञान को प्रस्तुत करती है। यह उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित करती है जो कि कलीसिया को परिवर्तित जीवन यापन करने और संसार में

सुसमाचार प्रचार करने के लिए सशक्त करता है। यह वर्णित करती है कि उसने प्रेरितों और आरम्भ की कलीसिया के अन्य अगुवों की सेवकाई को मान्यता देने के लिए कई चिन्ह और आश्चर्यकर्म का प्रदर्शन किया। यह गवाही देती है कि उसने मसीहियों को उत्साह से भर दिया जो कि विरोध और सताव का सामना कर रहे थे। संक्षेप में, प्रेरितों के काम की पुस्तक यह विवरण देती है कि पवित्र आत्मा वह है जो कि सुसमाचार और राज्य के फैलाव के लिए योग्य बनाने की सामर्थ्य देता है, और लोगों को धर्मी जीवन यापन करने के लिए सशक्त करता है।

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में विभिन्न तरीकों से कार्य किया, हम अपने ध्यान को कलीसिया पर उसके प्रभाव को तीन अवस्थाओं में देखने के द्वारा केन्द्रित करेंगे। सबसे पहले, हम पवित्र आत्मा को पिन्तेकुस्त के दिन से पहले देखेंगे। दूसरा, हम पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में आत्मा के उण्डेले जाने की जाँच करेंगे। और तीसरा, हम पिन्तेकुस्त के बाद आत्मा के कार्य की खोजबीन करेंगे। आइए सबसे पहले हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को देखें जो कि आत्मा को पिन्तेकुस्त से पहले का विवरण देती है।

पिन्तेकुस्त से पहले

प्रेरितों के काम 1:3-11 में, लूका ने यह वर्णन किया है कि यीशु ने उसके पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के मध्य चालीस दिनों का समय, प्रेरितों को शिक्षा देने में व्यतीत किया। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 1:3 में पढ़ते हैं:

> [यीशु] ने अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा (प्रेरितों के काम 1:3)।

जैसा कि हम देखेंगे कि, यीशु की राज्य के बारे में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण तत्व यह था कि पवित्र आत्मा एक विशेष तरीके से प्रेरितों के ऊपर शीघ्र आ जाएगा।

पिन्तेकुस्त से पहले पवित्र आत्मा के बारे में हम यीशु की शिक्षाओं के दो पहलुओं को छुएंगे। पहला, हम पवित्र आत्मा के आगमन के समय को देखेंगे। और दूसरा, हम उसके आगमन के उद्देश्य के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। आइए सबसे पहले यीशु की पवित्र आत्मा के आगमन के बारे में दी गई शिक्षा के ऊपर ध्यान दें।

समय

प्रेरितों के काम 1:4-8 में दिए गए यीशु के शब्दों को सुने:

> और उन से मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो... परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे। [प्रेरितों] ने इकट्ठे होकर उस से पूछा, "कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्त्राएल को राज्य फेर देगा?" उस ने उन से कहा: "उन समयों या कालों को जानना, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों के काम 1:4-8)।

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

ध्यान दें कि जब यीशु ने आत्मा के आने वाले बपतिस्मे की घोषणा की, तो प्रेरितों ने यह पूछा कि क्या यीशु इस्राएल के राज्य को पुन: स्थापित करने वाला था। इस्राएल के राज्य की स्थापना की अभिव्यक्ति से कई आधुनिक पाठक अपरिचित हैं इस लिए हमें इसे समझाने के लिए थोड़ा रूकना चाहिए।

पुराने नियम के भविष्द्वक्ताओं ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि क्योंकि इस्राएल और यहूदा के पाप इतने ज्यादा थे, जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर उन्हें प्रतिज्ञा की हुई भूमि से निर्वासित कर देगा और उन्हें विदेशी शासकों के अत्याचार के अधीन कर देगा। पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के ऊपर आधारित हो कर यहूदियों ने यह विश्वास किया कि परमेश्वर बाद में उनके पापों को क्षमा करते हुए मसीह को उसके लोगों को पुन: स्थापित करने के लिए, उन्हें वापस उनकी भूमि पर ले जाने के लिए और उनके ऊपर राज्य करने के लिए भेजेगा। दाऊद का वंश होने के नाते, मसीह इस्राएल और यहूदा के ऊपर राजा बन कर आएगा और इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को प्रतिज्ञा की हुई भूमि में केन्द्रित करते हुए परिवर्तित कर देगा, जहाँ पर लोग अनन्त काल और आशीषित जीवन का आनन्द मनाएंगे। पहली शताब्दी तक, इस्राएल ने सैकड़ों वर्षों तक न्याय का सामना किया और बड़ी लालसा से इस्राएल के राज्य की पुनः स्थापना के लिए एक राजनीतिक मसीह के लिए आने की प्रतीक्षा किया। इस लिए, जब प्रेरितों ने यह सुना कि यीशु स्वर्ग में रोहित होने वाला था तो उन्होंने यह आशा की कि वह पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को जाने से पहले पूरा करेगा। इस लिए ही उन्होंने उससे इस्राएल की पुन: स्थापना के बारे में पूछा। परन्तु फिर भी, यीशु ने यह शिक्षा दी कि अचानक से होने वाली इस्राएल की राजनीतिक पुन: स्थापना की प्रसिद्ध प्रतीक्षा गुमराह करने वाली थी और पुराने नियम की भविष्यद्वाणी का पूरा किया जाना पूरे संसार में सुसमाचार के फैलाव और मसीह के महिमा में भरे हुए पुन: आगमन के द्वारा होगा।

परन्तु फिर क्यों प्रेरितों ने यीशु के द्वारा पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के प्रति कहे गए वाक्य के प्रतिउत्तर में राज्य की पुन: स्थापना के बारे में पूछा? ठीक है, एक बार फिर से, प्रेरित पुराने नियम की भविष्यवाणी के बारे में सोच रहे थे। पुराने नियम के कई संदर्भों में, यह भविष्यद्वाणी की गई है कि जब न्याय पूरा हो जाएगा, तो परमेश्वर अपने आत्मा को इस रीति से उण्डेलेगा जैसा कि पहले कभी नहीं उंडेला गया है।

सुनिए भविष्यद्वक्ता यशायाह ने यशायाह 44:3-4 में आत्मा के बारे में क्या कहा है:

> क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएँ बहाऊँगा मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूँगा। वे मजनुओं की नाई बढ़ेंगे जो धाराओं के पास घास के बीच में होते हैं (यशायाह 44:3-4)।

यहाँ पर यशायाह ने पुन:स्थापना की बात, यह कहते हुए कही है कि परमेश्वर उसके आत्मा को भूमि के ऊपर उण्डेलेगा।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने यह घोषणा कि थी कि मसीह के आगमन से पहले, इस्राएल जिसे शास्त्रीओं ने पाप, भ्रष्टाचार और मौत का युग कहा है, में जीवन यापन करेगा। और उन्होंने यह घोषणा की कि जब मसीह आएगा तो वह एक नए युग का सूत्रपात करेगा, जिसे शास्त्रियों ने आने वाला युग कहा, ऐसा युग जिसमें परमेश्वर के शत्रुओं का न्याय होगा, और उसके लोग अन्ततः और अपरिवर्तनीय तरीके से धन्य ठहरेंगे। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने कभी भी निश्चित नहीं बताया कि यह प्रक्रिया कितना समय लेगी, परन्तु ज्यादातर शास्त्रियों ने यह आशा की कि यह अचानक से हो जाएगी।

इस दृष्टिकोण के विपरीत, यीशु ने यह समझाया कि परमेश्वर का राज्य राष्ट्रों में फैलते हुए समय के साथ प्रकट होता है। अचानक से आने की बजाय परमेश्वर का महिमा से भरा हुआ राज्य विभिन्न अवस्थाओं में पारगमन करेगा। आने वाला युग यीशु की पार्थिव सेवकाई के मध्य उदघाटित किया जाएगा।यह मसीह के

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

स्वर्ग में राज्य के दौरान निरन्तर चलता रहेगा, जैसा कि राज्य सुसमाचार की सेवकाई के द्वारा विस्तार करता रहेगा। और जब यीशु भविष्य में पुनः वापस आएगा, तो पाप के युग का पूरी तरह से अन्त हो जाएगा और विश्वव्यापी रूप से, मसीह का राज्य इसकी पूर्णता को प्राप्त करेगा।

आने वाले राज्य के प्रति यह दृष्टिकोण व्याख्या करता है कि क्यों यीशु ने प्रेरितों के पूछे गए प्रश्न का प्रतिउत्तर इस तरीके से दिया। पवित्र आत्मा कलीसिया पर उण्डेल दिया जाने पर था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी बातों की समाप्ति निकट थी। यीशु ने केवल राज्य का उदघाटन मात्र किया था और आत्मा की आशीष उसकी कलीसिया को सुसज्जित करती जो कि इस पाप से भरे हुए संसार में उसके पुन: आगमन तक जीवन यापन करती।

पवित्र आत्मा के आगमन के समय को ध्यान में रखते हुए, हम अब इसके आगमन के उद्देश्य को देखने के लिए मुड़ेंगे।

उद्देश्य

एक बार फिर से यीशु के प्रेरितों को प्रेरितों के काम 1:8 में कहे हुए शब्दों को सुनिए:

> परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों के काम 1:8)।

इन शब्दों में, यीशु ने प्रेरितों को आत्मा के बपतिस्मा के बारे में नए तरीके से सोचने के लिए पुनः निर्देशित किया। राज्य की अन्तिम अवस्था की आशा देने की तुलना में, आत्मा को उण्डेला जाने वाला था ताकि वह प्रेरितों को मसीह के लिए धर्मी और विश्वासयोग्य गवाह होने के लिए सशक्त करे। जो कुछ यीशु ने कहा उस पर ध्यान केन्द्रित करते हुए आत्मा की सेवकाई के दो आयामों को खोल दें: सामर्थ्य और धार्मिकता भरी हुई गवाही।

सबसे पहले, यीशु ने उसके शिष्यों को कहा कि वे आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा सामर्थ्य को प्राप्त करेंगे। आत्मा का सामर्थ्य के साथ होना पुराने नियम में एक सामान्य बात है, जिसे अक्सर "परमेश्वर के आत्मा" में अभिव्यक्ति में प्रस्तुत किया गया है, जो कि इब्रानी वाक्य रूआख इलोहीम (~YHIÊL{A/ X:WR)) का अनुवाद है। यह इब्रानी अभिव्यक्ति परमेश्वर की ओर से आने वाली सामर्थ्यशाली हवा या ऊर्जा की शक्ति का संकेत देती है। पुराने नियम में, परमेश्वर का आत्मा विस्तृत रूप में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए संसार में सामर्थशाली तरीके से कार्य करता था।

पवित्र आत्मा की सामर्थ्य नाटकीय तरीकों से लोगों के जीवनों में प्रगट होती थी। उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर का आत्मा न्यायियों के अध्याय 14-15 में शिमशोन के ऊपर उतरा, तो शिमशोन ने आश्चर्यजनक संसारिक कारनामों को प्रगट किया जिसके कारण इस्राएल ने पलिश्तियों के ऊपर महान् विजय को प्राप्त किया।

आत्मा की सामर्थ्य के अतिरिक्त, यीशु ने यह भी उल्लेख किया है कि आत्मा उसके शिष्यों को धार्मिकता भरी हुई गवाही देने के योग्य बनाएगा। यह संगठन भी पुराने नियम में दिखाई देता है। कई अवसरों पर, परमेश्वर के आत्मा ने उसके लोगों को साहसपूर्वक और प्रभावी ढँग से परमेश्वर के बदले में बोलने की सामर्थ्य दी। उदाहरण के लिए, मीका 3:8 के शब्दों को सुनिए:

> परन्तु मैं तो यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूँ (मीका 3:8)।

इस संदर्भ में, मीका ने समझाया है कि आत्मा ने उसे सच्चाई बोलने के लिए योग्य किया है यद्यपि उसका झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने विरोध किया था।

इसलिए, जब यीशु ने उसके प्रेरितों को कहा कि वह उन्हें पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा देकर उसके गवाह होने के लिए सामर्थ्य देगा, तो उसने यह संकेत दिया कि आत्मा उनमें कार्य वैसे ही करेगा जैसा कि पुराने नियम में अन्यों के द्वारा कार्य किया था। पवित्र आत्मा प्रेरितों के सन्देश की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए उनमें सामर्थ्य के कार्यों को भी प्रगट करेगा, और वे जो उनका विरोध करते हैं उन्हें बोलने के लिए शब्द देगा। और इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि आत्मा के यह प्रगटीकरण प्रेरितों के काम की पुस्तक में बार बार प्रकट हुए हैं।

अब क्योंकि हमने उन कुछ तरीकों को देख लिया है जिनमें लूका ने पवित्र आत्मा को पिन्तेकुस्त के दिन से पहले परिचित किया, हमें अब पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के उण्डेले जाने की ओर मुड़ना चाहिए जब कलीसिया यरूशलेम में एकत्र थी।

पिन्तेकुस्त का दिन

प्रेरितों का काम 2:1-4 पवित्र आत्मा के कलीसिया के ऊपर उण्डेले जाने के वर्णन के बारे में बतलाता है:

> जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे (प्रेरितों का काम 2:1-4)।

इस घटना की महत्वपूर्णता की खोज करने के लिए, हम तीन मुख्य विषयों को स्पर्श करेंगे। सबसे पहला, हम पिन्तेकुस्त की विशेषता को देखेंगे। दूसरा, हम अन्यभाषा में बोलने की घटना पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम इन घटनाओं के परिणामों को देखेंगे। आइए हम सबसे पहले पिन्तेकुस्त की विशेषता पर ध्यान दें।

विशेषता

पिन्तेकुस्त का समय इस्राएल के पवित्र पंचांग में फसह के साथ निकटता से जुड़ा उत्सव का समय था। निर्गमन 12 और लेवीय अध्याय 23 के अनुसार, फसह का समय ऐसा समय था जब इस्राएली उनके मिस्र में से छुटकारे को स्मरण करते थे। यह मिस्र के ऊपर आई अन्तिम विपत्ति की रात के स्मरण में मनाया जाता था, जब परमेश्वर ने मिस्रियों के पहिलौठों को मार दिया था परन्तु विश्वासयोग्य इस्राएलियों के घरों के ऊपर से निकल गया था। फसह का त्यौहार यह स्मरण दिलाता था कि यहूदियों को कैसे परमेश्वर ने मिस्र के दासत्व से मुक्त कर दिया था।

पिन्तेकुस्त फसह के 50 दिनों के बाद, आरम्भ की फसल कटाई समय मनाया जाता था। यह मूल रूप से परमेश्वर के द्वारा प्रतिज्ञा किए हुए देश में अन्न के प्रावधान के लिए मनाया जाता था। इस समय, इस्राएली

उनकी फसलों में से पहले फल को भेंट के रूप में परमेश्वर के पास धन्यवाद के रूप में उनकी सारी फसल में से ले आते थे जिसको वे उस वर्ष काटने की आशा करते थे।

इसके अतिरिक्त, नए नियम के समय में, यहूदी पिन्तेकुस्त के उत्सव को मूसा को परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था के लिए भी स्मरण करते थे। पवित्र आत्मा का इस समय उण्डेला जाना इस लिए भी महत्वपूर्ण था क्योंकि यह उन्हें भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह द्वारा घोषित की गई आशा का भी स्मरण दिलाता था।

सुनिए यिर्मयाह 31:31-33 में भविष्यद्वक्ता ने क्या लिखा है:

> फिर यहोवा की यह वाणी है, "सुन ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूँगा... मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा और वे मेरी प्रजा ठहरेगें" (यिर्मयाह 31:31-33)।

व्यवस्था का हृदयों पर लिखा जाना परमेश्वर की आत्मा का कार्य है जिसकी प्रतिज्ञा पुराने नियम में की गई है और जो कि नए नियम में पूरी हुई।

पुराने नियम की इस पृष्टभूमि को ध्यान में रखते हुए, प्रेरितों के काम अध्याय 2 में पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा का उण्डेला जाना मसीही कलीसिया के लिए विशेष महत्व रखता है। यीशु का क्रूस पर बलिदान फसह के त्यौहार के बीच में हुआ। वह फसह का अन्तिम मेम्ना बन कर, परमेश्वर के लोगों के लिए पाप और मृत्यु की दासता से अनन्त छुटकारे को सुरक्षित करने लिए बलिदान हुआ।

जैसा कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 5:7 में कहता है कि:

> क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है (1 कुरिन्थियो 5:7)।

उपरोक्त संदर्भ के प्रकाश में, यह आश्चर्य करने वाली बात नहीं है कि आत्मा का उण्डेला जाना पिन्तेकुस्त के दिन हुआ। जबकि पिन्तेकुस्त ने फसल की महानता की ओर ध्यान आकर्षित किया, आत्मा का आगमन अनन्त मोक्ष की फसल का पहला फल था। आरम्भ के मसीहियों पर आत्मा का आगमन यह संकेत देता है कि कलीसिया ने भी परमेश्वर की व्यवस्था को उनके हृदयों पर लिखे जाने को प्राप्त कर लिया था, जिसने कलीसिया को साहसपूर्वक गवाही देने के लिए सुसज्जित कर दिया था। जैसा कि पौलुस रोमियों 8:23 में लिखता है कि, मसीही विश्वासियों के पास

> ... आत्मा का पहला फल हैं (रोमियों 8:23)।

जब लूका ने आत्मा के उण्डेले जाने के बार अपने वर्णन को लिखा है, तो उसने इसे पिन्तेकुस्त के साथ सम्बद्ध किए जाने पर जोर देते हुए इसके अत्याधिक महत्वपूर्ण होने का संकेत दिया है कि क्या हुआ था। यह कोई सामान्य घटना नहीं थी; यह कई आश्चर्यकर्मों में से एक नहीं था। पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के वरदान ने मुक्ति की बड़ी फसल की कटाई और परमेश्वर के लोगों में आन्तरिक नवीनीकरण को आरम्भ कर दिया ताकि वे मसीह के राज्य को स्थापित करें।

अब क्योंकि हम पिन्तेकुस्त के समय की कुछ महत्वपूर्णता को आत्मा के उण्डेले जाने के द्वारा समझते हैं, इस लिए अब हमें अन्यभाषाओं की घटना की ओर मुड़ना चाहिए जो कि पवित्र आत्मा की उपस्थिति का प्रकटीकरण है।

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

अन्य भाषाएँ

प्रेरितों के काम की पुस्तक अध्याय 2 में, लूका ने वर्णन किया है कि जब परमेश्वर का आत्मा पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया में उण्डेला गया था, तो प्रेरितों और अन्य विश्वासियों ने अन्य भाषा में बोला। दुर्भाग्य से, कलीसिया में अन्यभाषा के वरदान को लेकर बहुत ज्यादा भ्रम की स्थिति है। इस लिए हमें दो प्रश्नों पर चिंतन करने के लिए एक क्षण रूकना चाहिए। सबसे पहले, अन्यभाषा का वरदान क्या था? और दूसरा, क्यों परमेश्वर ने इस वरदान को दिया?

आधुनिक कलीसिया में, विभिन्न मसीही विश्वासी अन्यभाषा के वरदान को विभिन्न तरीकों से समझते हैं। कुछ यह बहस करते हैं कि अन्यभाषा सुनने की बजाए बोलने का आश्चर्यकर्म था। इस दृष्टिकोण में, प्रेरितों ने उन्मादपूर्ण वाक्यों को बोला, जिन्हें आत्मा ने श्रोताओं को उनकी अपनी भाषा में समझने के लिए सक्षम किया।

परन्तु लूका के कम से कम दो विवरण इसे बहुत ही ज्यादा एक जैसा बना देते हैं कि आश्चर्यकर्म जो हुआ वह बोलने का हुआ, ऐसा जिसमें आरम्भ के विश्वासियों ने वास्तविक मानव भाषा में बात की थी जिसे कि उन्होंने कभी भी नहीं सीखा था। और सबसे ज्यादा लूका ने विशेष तौर पर लिखा है कि पवित्र आत्मा ने अन्य भाषा में बात करने के लिए वक्ताओं को सक्षम किया। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 2:4 में पढ़ते हैं:

> और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे (प्रेरितों के काम 2:4)।

लूका ने इस बात का उल्लेख बिल्कुल भी नहीं किया है कि पवित्र आत्मा श्रोताओं को आश्चर्यजनक तरीके से सुनने के लिए योग्य कर रहा था। दूसरा, शब्द अन्यभाषा यूनानी भाषा की संज्ञा ग्लोसा का अनुवाद है। नए नियम में और अन्य यूनानी साहित्य में, यह शब्द अक्सर सामान्य मानवीय भाषाओं की ओर संकेत करता है। और यहाँ पर शक करने के लिए ऐसा कोई ठोस कारण नहीं है जो इसके संदर्भ से अलग ही कुछ अर्थ दे। इसलिए हम यह भरोसा कर सकते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन अन्यभाषा का आश्चर्यकर्म अशिक्षित मानव भाषाओं में बात करने के लिए एक अलौकिक क्षमता थी।

परन्तु क्यों पवित्र आत्मा ने उसकी उपस्थिति को इस तरह विशेष रूप में प्रकट किया? उस दिन अन्यभाषा की क्या विशेषता थी? सुनिए पतरस के प्रेरितों के काम 2:16-21 में दी हुई व्याख्या को:

> परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है: "कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। बरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उण्डेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे... प्रभु के महान और प्रसिद्ध दिन के आने से पहिले। और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा (प्रेरितों के काम 2:16-21)।

इस संदर्भ में, पतरस ने योएल 2:28-32 की ओर संकेत करके जो कुछ पिन्तेकुस्त के दिन वहाँ हो रहा था की व्याख्या की है, जिसमें अन्यभाषा का आश्चर्यकर्म भी सम्मिलित है।

दिलचस्प बात यह है कि, पतरस ने योएल के शब्दों को ठीक वैसा ही उद्धृत नहीं किया है जैसे यह लिखे हुए हैं। इब्रानी भाषा की बाइबल और सप्तिवगिंता (सेप्टोजेन्ट) में, योएल का लेख ऐसे आरम्भ होता है,

"और बाद में " परमेश्वर ऐसे कहता है कि, मैं अपने आत्मा को सारे लोगों के ऊपर उण्डेलूँगा।" परन्तु पतरस ने योएल 2:28 का यह कहते हुए विस्तारवर्धक अनुवाद किया है कि, "अन्तिम दिनों में।" पतरस का योएल के शब्दों में परिवर्तन यह दिखलाता है कि उसने यह विश्वास किया है कि पिन्तेकुस्त के दिन की घटनायें बाद के दिनों, अर्थात् अन्तिम दिनों का हिस्सा थी।

अब, पतरस का विश्वास यह था कि आत्मा का उण्डेला जाना अन्तिम दिनों में हुआ जिसे उसने अन्य शब्दों साथ योएल से उद्धृत करते हुए समर्थन दिया है। जब पतरस ने योएल अध्याय 2 को उद्धृत किया तो उसका संकेत यह था कि आत्मा का आगमन प्रभु के महान और महिमा से भरे हुए दिन पहले प्रकट होगा।

सम्पूर्ण पुराने नियम में, प्रभु का दिन परमेश्वर के न्याय और आशीष का दिन है, और पुराने नियम में कई अवसरों पर, यह ऐसे दिन के लिए संकेत करता है जब परमेश्वर अन्त में और पूरी तरह से उसके शत्रुओं को नाश कर देगा और उसके विश्वासयोग्य लोगों को आशीषित करेगा।

इस लिए, जब पतरस ने प्रभु के महान और महिमा से भरे हुए दिन के प्रदर्शन को आत्मा के उण्डेले जाने के द्वारा व्याख्या दी, तो वह यह कह रहा था कि जो कुछ पिन्तेकुस्त के दिन घटित हो रहा था वे इतिहास के महान क्षण थे। पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा का आगमन अन्तिम दिनों का आश्चर्य था, यह महिमा से भरे हुए अलौलिक हस्तक्षेप का समय था जो कि परमेश्वर के राज्य के अन्तिम चरण को स्थापित कर रहा था।

दुर्भाग्य से, बहुत सारे विश्वासी आज आत्मा के इस उण्डेले जाने के भव्य महत्व को खो देते हैं। इसकी बजाए विश्वासियों में यह सोच लोकप्रिय है कि प्रेरितों के काम अध्याय 2 की घटनायें प्रत्येक विश्वासी की व्यक्तिगत् पवित्रता के लिए एक नमूने के रूप में हैं। हम यह अपेक्षा उत्पन्न करते हैं कि सभी सच्चे आत्मिक विश्वासी वैसे ही आत्मा के अनुभव को नाटकीय प्रगटीकरण के साथ प्राप्त करेंगे जैसे पिन्तेकुस्त के दिन हुआ और प्रेरितों के काम में कई अन्य अवसरों पर हुआ।

इसे इस तरह से सोचें। नया नियम हमें शिक्षा देता है कि परमेश्वर के राज्य के उदघाटन के समय परमेश्वर के कई बड़े और महान् अद्भुत कार्य प्रकट हुए। मसीह हमारे लिए क्रूस के ऊपर मर गया, मृतकों में जी उठा और स्वर्गारोहित हो कर पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हुआ। प्रत्येक बार जब भी एक व्यक्ति मसीह के पास विश्वास में आता है, तो इस घटना के गुण उस व्यक्ति के जीवन में लागू किए जाते हैं। परन्तु मसीह प्रत्येक बार जब भी कोई व्यक्ति उसमें नया जीवन प्राप्त करता है तो उसके लिए न ही मरता,न ही जी उठता और न ही स्वर्गारोहित होता है।

कुछ इस तरह से, नया नियम यह शिक्षा देता है कि पिन्तेकुस्त भी सभी समयों के-लिए-एक-बार की महान् घटना थी जिसे परमेश्वर अन्त के दिनों में लेकर आया है। बाद में हम इस अध्याय में यह देखेंगे कि यह अन्य अवसरों के लिए भी सत्य है जब आत्मा को प्रेरितों के काम में विशेष तरीकों से उण्डेला गया। क्योंकि उन आरम्भ के दिनों में, मसीही कलीसिया में, पवित्र आत्मा की उपस्थिति को कलीसिया के ऊपर लागू किया गया था, हमें उसकी आराधना के लिए सशक्त किया गया था। हमें सदैव यह अपेक्षा करनी चाहिए कि पवित्र आत्मा विश्वासियों के जीवनों में उपस्थित रहता है, परन्तु हमें अक्षरश: ऐसी अपेक्षा नहीं करनी चाहिए वह उसी तरह से प्रगट होता है जैसा कि हम उसे पिन्तेकुस्त के दिन देखते हैं। सच्चाई तो यह है, कि यहाँ तक कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में अन्य अवसरों पर भी विशेष रूप से आत्मा के उण्डेले जाने के समय, आत्मा के प्रकटीकरण अक्षरश: एक जैसे नहीं थे। पिन्तेकुस्त के दिन आग की सी दिखाई देती हुई जीभें और बड़ी आँधी की आवाज, और साथ ही भविष्यद्ववाणी का वरदान और अन्यभाषा, कोई सामान्य विश्वास के अनुभव नहीं थे। वे तो महान् आलौकिक हस्तक्षेप के परिणाम थे, जो कि परमेश्वर का कार्य था जिसके द्वारा उसने उसके राज्य का उदघाटन किया था।

अब क्योंकि हमने पिन्तेकुस्त की विशेषता को देख लिया है और अन्यभाषा के आश्चर्यकर्म को भी देखा है जो कि पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के साथ आया, इसलिए हमें अब उन घटनाओं के परिणामों की ओर मुड़ना चाहिए जो उस दिन प्रकट हुई।

परिणाम

जैसा कि आपको स्मरण होगा, हमने इस अध्याय में पहले ही देख लिया है कि यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा प्रेरितों को उसकी साहसपूर्वक गवाही देने के लिए सशक्त करने के लिए दिया गया था। इसलिए जब हम पिन्तेकुस्त के परिणामों की चर्चा करते हैं, तो हम इस तरीके के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे जिसमें पवित्र आत्मा ने प्रेरितों करने को सामर्थ्य दी है और इस सामर्थ्य को राज्य के सुसमाचार के प्रसार के लिए प्रयोग किया। इस पर आरम्भ करने के लिए, आइए हम उस तरीके पर विचार करें जिसमें पवित्र आत्मा ने प्रेरित पतरस को सशक्त किया।

जब हम लूका के सुसमाचार का सर्वेक्षण करते हैं, तो हम पाते हैं कि पवित्र आत्मा के आगमन से पहले, पतरस सदैव स्पष्ट विचारों के साथ नहीं था। उसे रूपान्तरण के पहाड़ पर झिड़का गया था क्योंकि वह मूसा और एलिय्याह के लिए तम्बू निर्मित करना चाहता था। उसने प्रभु के पकड़े जाने वाली रात मसीह का तीन बार इन्कार किया। और यहाँ तक कि पतरस की प्रेरितों के काम की सेवकाई के मध्य, लूका ने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया है पतरस के पास उच्च शिक्षा नहीं थी और वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जिससे यह अपेक्षा की जाती हो कि वह किसी को निरूत्तर कर देगा। सुनिए प्रेरितों के काम 4:13 में लूका के दिए हुए शब्दों:

> जब उन्हों ने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उन को पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं (प्रेरितों के काम 4:13)।

पतरस के दिए गए इस चित्र के साथ, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य थी जिसने उसे परिवर्तित कर दिया था और पिन्तेकुस्त के दिन उसे एक गतिशील और सफल सुसमाचार प्रचार करने के लिए सक्षम किया था। पतरस ने उनका खंडन किया जिन्होंने यह दोष लगाया कि विश्वासी नशे में थे। उसने पुराने नियम के संदर्भ से टिप्पणी दी और उसे निरूत्तर कर देने वाले तरीके से यह प्रदर्शित करते हुए लागू किया कि यीशु ही भविष्यद्वाणी किया हुआ मसीह था। पवित्र आत्मा ने भी पतरस और अन्य प्रेरितों की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए उनकी घोषणा को गवाही देने लिए आश्चर्यकर्मों को प्रकट करने के लिए उन्हें सशक्त किया। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 2:43 में पढ़ते हैं:

> और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे (प्रेरितों के काम 2:43)।

पवित्र आत्मा की पतरस और अन्य प्रेरितों को सुसमाचार की गवाही देने के लिए प्रदान की गई महान् सामर्थ्य के प्रकाश में, हमें इस बात के आश्चर्य में नहीं पड़ना चाहिए कि परमेश्वर ने प्रेरितों को गवाही देने के लिए आशीषित किया। सुनिए कैसे लूका उनकी गवाही को प्रेरितों के काम 2:41, 47 में वर्णित करता है:

> सो जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्हों ने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब

> लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था (प्रेरितों के काम 2:41, 47)।

पिन्तेकुस्त के दिन तीन हजार लोग प्रभु में मिल गए। और यह बाहरी, गुणात्मक वृद्धि आत्मा के सशक्त किए जाने के परिणामस्वरूप आई। परन्तु कलीसिया की वृद्धि केवल बाह्य रूप से ही नहीं हुई। आन्तरिक वृद्धि भी आत्मा के सशक्त किए जाने के परिणामस्परूप आई। सुनिए लूका के प्रेरितों के काम 2:42-47 के शब्दों को:

> और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे ... और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे। और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था (प्रेरितों के काम 2:42-47)।

जब आरम्भ की कलीसिया के विश्वासियों ने प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार जीवन यापन करना आरम्भ किया, परमेश्वर और अपने साथ के अन्य विश्वासियों के प्रति सेवा में अपने जीवनों को समर्पित कर दिया, तो कलीसिया आन्तरिक तौर पर वृद्धि करने लगी। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के परिणाम आरम्भ की कलीसिया के दिनों के लिए आश्चर्यजनक थे।

लूका की पिन्तेकुस्त के दिन से पहले और पिन्तेकुस्त के दिन के बाद पवित्र आत्मा के ऊपर चर्चा को देख लेने के बाद, हम अब उस तरीके को देखेंगे जिसमें पवित्र आत्मा ने पिन्तेकुस्त के बाद कार्य किया जब उसने सुसमाचार की सेवकाई के लिए निरन्तर सशक्तिकरण के कार्य को किया।

पिन्तेकुस्त के बाद

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका पिन्तेकुस्त के बाद पवित्र आत्मा के कई बार किए हुए नाटकीय कार्य की ओर मुड़ता है। उदाहरण के लिए, हम तीन संदर्भों के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। हम सबसे पहले एक ऐसी घटना को देखेंगे जो की सामरिया शहर के गुमनाम स्थान पर घटित हुई। दूसरा, हम कैसरिया में घटित हुई एक घटना को देखेंगे। और तीसरा, हम इफिसुस में आत्मा के प्रगटीकरण के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। आइए सबसे पहले हम सामरिया में, यरूशलेम के ठीक उत्तर में, आत्मा की सेवकाई को देखें।

सामरिया

प्रेरितों के काम 8:14-17 में, लूका ने एक अन्य स्थान पर आत्मा को विशेष तरीके से विश्वासियों के ऊपर उतरते हुए लिखा है। सुनिए लूका ने वहाँ पर क्या लिखा है:

> जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा। और उन्हों ने जाकर उन के लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएँ। क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा था,

> उन्हों ने तो केवल प्रभु यीशु में नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्हों ने उन पर हाथ रखे और उन्हों ने पवित्र आत्मा पाया (प्रेरितों के काम 8:14-17)।

सामान्य तौर पर प्रेरितों के काम में (जैसा कि आज के दिनों में होता है), पवित्र आत्मा उन लोगों के ऊपर उण्डेला गया जो कि पहली बार विश्वास में आए थे, न कि बाद में किसी समय पर। इस सम्बन्ध मैं, दृश्य यहाँ पर पिन्तेकुस्त के सृदश है: विश्वासियों ने आत्मा को उनके मन परिवर्तन के बाद प्राप्त किया। यह एक विशेष समय था, आत्मा का नाटकीय तरीके से उण्डेला जाना था। सामरियों पर आत्मा इस रीति से क्यों उतरा?

ठीक है, आत्मा के इस असामान्य तरीके से उण्डेले जाने की सबसे उत्तम व्याख्या यह है कि इसने बड़ी सँख्या में सामरियों का मसीही विश्वास में आने के बारे में सूचित किया। जैसा कि आपको स्मरण होगा कि, यीशु ने प्रेरितों को परमेश्वर का राज्य यरूशलेम से यहूदिया, फिर सामरिया और फिर पृथ्वी के अन्तिम छोर तक विस्तार करने के लिए अधिकृत किया था। यरूशलेम में यहूदिया पिन्तेकुस्त के दिन एक आरम्भिक बिन्दु था। परन्तु सामरियों की विरासत मिलावटी थी, अर्थात् वे यहूदी और अन्यजातियों से मिलकर बने थे, और उन्होंने परमेश्वर की आराधना पुराने नियम में दिए हुए निर्देशों के अनुसार नहीं किया। इस लिए, जब सामरिया में सुसमाचार पहुँचा, तो इसने एक नए चरण को, यीशु के द्वारा उसके शिष्यों को दिए हुए आदेश की पूर्णता की ओर मुख्य चरण का प्रतिनिधित्व किया। यह जातियों की जातीय सीमाओं के पार सुसमाचार का पहला बड़ा विस्तार किया जाना था। पवित्र आत्मा ने इन विश्वासियों को अन्य भाषा बोलने के लिए सशक्त किया था ताकि ये प्रेरितों को और बाकी की कलीसिया को यह गवाही दे सकें कि सामरियों को भी कलीसिया ने पूरी तरह अपना लिया गया है।

सामरिया में आत्मा की इस समझ को घ्यान में रखते हुए, हमें कैसरिया की ओर मुड़ना चाहिए, जहाँ पर पवित्र आत्मा एक बार फिर से इस तरह से उतरा जो कि हमें जो कुछ पिन्तेकुस्त के दिन घटित हुआ था, के बारे में स्मरण दिलाता है।

कैसरिया

सामरिया के अपरिचित शहर में हुई घटना के सदृश, कैसरिया की परिस्थिति ये संकेत देती है कि वहाँ पर भी पहली बार सुसमाचार जातियों की सीमाओं को तोड़ते हुए पहुँचा था। इस घटना में, अन्यजाति पहली बार मसीह में एक बड़ी सँख्या में आ मिले थे, विशेषकर रोमी सूबेदार कुरनेलियुस और उसका घराना।

प्रेरितों के काम 10:44-47 में यह वर्णित करता है कि उस समय क्या हुआ जब पतरस ने कुरनेलियुस के घराने को सुसमाचार प्रचार किया:

> पतरस ये बातें कह ही रहा था... कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उण्डेला गया है। क्योंकि उन्हों ने उन्हें भाँति भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा... इन्होंने हमारी नाई पवित्र आत्मा पाया है? (प्रेरितों के काम 10:44-47)।

एक बार फिर से, एक आश्चर्य कर देने वाला सामान्तर पिन्तेकुस्त के दिन के लिए प्रमाणित होता है: वे जिन्होंने सुसमाचार में विश्वास किया था वे अन्य भाषा बोलने लगे। पतरस ने तो यहाँ तक टिप्पणी की कि

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

कैसरिया के विश्वासियों ने भी पवित्र आत्मा को प्राप्त किया था जैसे कि हमने प्राप्त किया था, जो शायद पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के उण्डेले जाने का संकेत देता है।

पुराने नियम में, अन्यजाति परमेश्वर की इस्राएल के साथ बान्धी गई वाचाओं से बाहर थे। और विश्वासयोग्य यहूदी लगातार स्वयं को मन न फिराए हुए अन्यजातियों से दूर रखते थे। इसलिए, यह आरम्भ की कलीसिया के लिए अचम्भे की बात ठहरी जब अन्यजातियों ने मसीह में यहूदी धर्म में पूरी तरह मन परिवर्तित किए बिना मन परिवर्तन किया।

परिणामस्वरूप, पवित्र आत्मा कुरनेलियुस और उसके घराने के ऊपर आश्चर्यजनक तरीके से यह प्रदर्शित करते हुए उण्डेल दिया गया कि अन्यजातियों के राष्ट्रों के लिए भी अन्त में दरवाजों को खोल दिया गया है। सुनिए प्रेरितों के काम 11:4,15,18 के शब्दों को, जहाँ लूका ने अन्य जातियों के प्रति कलीसिया की प्रतिक्रिया के बारे में वर्णित किया है:

> तब पतरस... ने उन्हें आरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया वह तुम से ऐसी बातें कहेगा... "जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था।" ... यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, "कि परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है।" (प्रेरितों के काम 11:4,15,18)।

अन्यजातियों का मसीह में आने का तरीका पिन्तेकुस्त से मिलता जुलता था, इस लिए पवित्र आत्मा ने यह प्रदर्शित किया कि उनका मन परिवर्तन वास्तविक था, और उसकी अन्यजातियों के साथ राज्य के निर्माण की योजना का आरम्भ हो गया था।

अब क्योंकि हमने सामरिया और कैसरिया में आत्मा के कार्य के ऊपर देख लिया है, हम अब इफिसुस में क्या हुआ को देखने के लिए तैयार हैं।

इफिसुस

यह घटना प्रेरितों के काम 19:1-6 में वर्णित की गई है, जहाँ पर हम निम्नलिखित विवरण को पढ़ते हैं:

> पौलुस... ऊपर से सारे देश से होकर इफिसुस में आया। और कई चेलों को देखकर उन से कहा; "क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?" उन्हों ने उस से कहा, "हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।" उस ने उन से कहा; "तो फिर तुम ने किस का बपतिस्मा लिया?" उन्हों ने कहा; "यूहन्ना का बपतिस्मा।" पौलुस ने कहा; "यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।" यह सुनकर उन्हों ने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया। और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे (प्रेरितों के काम 19:1-6)।

एक बार फिर से, हम पिन्तेकुस्त के दिन जैसे सामान्तरों को यहाँ पाते हैं। यीशु में उनके बपतिस्मे के बाद, पवित्र आत्मा इन लोगों के ऊपर आ उतरा और वे अन्य भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।

इस संदर्भ में, लूका ने इफिसुस में पवित्र आत्मा को नाटकीय तरीके से उतरते हुए वर्णित किया है, जो कि एशिया माईनर का एक मुख्य शहर था, जो यहूदिया और सामरिया से बहुत दूर था। जैसा कि हमने देखा है कि, लूका ने पहिले ही आत्मा के कार्य को यरूशलेम, से सामरिया और अन्यजातियों में होते हुए देख लिया

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

था। असामान्य तथ्य यह है कि आत्मा को प्राप्त करने वाले लोग यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शिष्य थे। अनुमानत: यह पश्चाताप किए हुए यहूदी थे जिन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही को यूहन्ना के प्रकाशन से पहले प्राप्त किया था कि यीशु ही लम्बे-समय से प्रतीक्षा किया जाने वाला मसीह था।

लूका ने इस घटना पर प्रकाश इस लिए दिया है क्योंकि यह एक विषय को बन्द करता है जिसे लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक के आरम्भ में जोर देता है: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के बीच के सम्बन्ध के ऊपर। आपको प्रेरितों के काम 1:5 का स्मरण होगा, यीशु ने अपनी सेवकाई की तुलना यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ इस तरह से की है:

> क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे (प्रेरितों के काम 1:5)।

इफिसुस में यूहन्ना के शिष्यों के ऊपर आत्मा के उण्डेले जाने की कहानी यह संकेत देती है कि अब यीशु का आत्मा को लाने का कार्य एक नई अवस्था में पहुँच चुका है। यहाँ तक कि यूहन्ना के शिष्य भी मसीह का अनुसरण करने वाले बन गए थे और उन्होंने मसीह की आत्मा को प्राप्त किया था। कोई भी चीज मसीह को प्राप्त करने के लिए पूरी नहीं है और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में जीवन यापन करना परमेश्वर की इच्छा अनुसार था।

लूका ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि जैसे जैसे प्रेरित कलीसिया के मिशन का विस्तार करते गए, उनका राज्य की सीमाओं पर किया गया कार्य लगातार पवित्र आत्मा के नाटकीय तौर पर उण्डेले जाने के द्वारा प्रमाणित किया गया। आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा, सुसमाचार का प्रसार निर्बाध गति से यरूशलेम से यहूदिया और फिर सामरिया, और फिर पृथ्वी के अन्तिम छोर तक हुआ। यहाँ तक कि आज के समय में भी, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य ही केवल वह तरीका है जिसके द्वारा कलीसिया परिवर्तित हो सकती है और प्रभावशाली तरीके से सुसमाचार प्रचार कर सकती है। हमें भी आत्मा की सामर्थ्य पर निर्भर करने के लिए खोज करनी चाहिए यदि हम सुसमाचार के सन्देश के लिए प्रभावशाली और धर्मी गवाह होना चाहते हैं।

प्रेरित

पवित्र आत्मा की भूमिका को देख लेने के बाद, हम अब हमारे दूसरे विषय पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं जो कि प्रेरित है। मसीह के स्वर्गारोहण होने से पहले, उसने उसकी सेवकाई को निरन्तर चलते रहने के लिए प्रेरितों के नियुक्त किया, जो कि उसके राज्य को यरूशलेम से सुसमाचार के द्वारा पृथ्वी के अन्तिम छोर तक पहुँचा दें। इस अध्याय में हमने पहले यह देखा कि प्रेरितों के काम 1:8 में यह वर्णन किया गया है कि पवित्र आत्मा ने आरम्भ की कलीसिया में विशेष भूमिका अदा की। सुनिए यीशु के उसके प्रेरितों को कहे गए शब्दों को:

> परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों के काम 1:8)।

हमारे अध्याय के इस स्थान पर, हमें अपने ध्यान को दूसरे विषय की ओर केन्द्रित करना चाहते हैं जो कि इस आयत के ऊपर निर्भर करता है: प्रेरितों की भूमिका। जैसा कि यीशु ने यहाँ कहा है, कि पवित्र आत्मा प्रेरितों को इस लिए दिया गया ताकि वे पूरे संसार में उसके गवाह बन जाएँ।

आरम्भ की कलीसिया में, जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में सुसमाचार की गवाही दी वे "शहीद" या "गवाह" के रूप में जाने गए। ज्यादा प्रतिकूल परिस्थितियों में, गवाहों पर अत्याचार किए गए यहाँ तक कि मसीह के लिए गवाही देने के कारण उन्हें मार दिया गया। वास्तविक सच्चाई तो यह है कि कलीसिया की परम्परा हमें बताती है कि अधिकांश प्रेरितों का निधन इसी तरह से हुआ। सताव के आने पर भी मसीह के लिए गवाही देने का यह विषय लूका की चिंता का मुख्य विषय रहा है जब उसने आरम्भ की कलीसिया के बारे में लिखा। और इस सम्बन्ध में, कोई भी प्रेरितों के जैसा मसीह के लिए साहसी, प्रभावी गवाह के रूप में नहीं था।

हम मसीह की गवाही देने के लिए प्रेरितों की भूमिका के तीन आयामों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। सबसे पहले, हम यह ध्यान देंगे कि उनकी गवाही अद्वितीय थी। दूसरा, हम यह देखेंगे कि यह आधिकारिक थी। और तीसरा, हम उनके गवाह के विभिन्न स्वभावों पर ध्यान देंगे, कि जिस तरह उन्होंने सुसमाचार के संदेश को प्रस्तुत करने के लिए अलग अलग तरीकों को प्रयोग किया। आइए हम प्रेरितों के पद के लिए उनकी अद्वितीय योग्यता के साथ आरम्भ करते हैं।

अद्वितीय

प्रेरित कम से कम दो कारणों से अद्वितीय थे। उनके पद की शर्तें किसी को भी एक प्रेरित बुलाने से रोकती थी, से आरम्भ करते हैं।

शर्तें

हम सभी जानते हैं कि यीशु के मूल रूप से बारहों में से एक प्रेरित अर्थात् यहूदा इस्करियोती ने हमारे प्रभु से विश्वासघात करके उसे क्रूस पर चढ़ाया था। बाद में, यहूदा ने अपने जीवन को समाप्त करते हुए, शेष ग्यारह प्रेरितों को अपने पीछे छोड़ दिया था। तब, यीशु के स्वर्ग में स्वर्गारोहण होने के बाद, ग्यारहों में सबसे पहली प्राथमिकता यहूदा के स्थान पर नए प्रेरित को चुनने की आई।

प्रेरितों के काम 1:21-26 में, पतरस नए प्ररिते के चुने जाने की शर्तों को इस तरह से विवरण देता है:

> इसलिये जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता जाता रहा... जो लोग बराबर हमारे साथ रहे। उचित है कि उन में से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए। तब उन्हों ने दो को खड़ा किया... और यह कहकर प्रार्थना की; "कि हे प्रभु ... यह प्रगट कर कि इन दोनों में से तू ने किस को चुना है। कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले... तब उन्हों ने उन के बारे में चिट्ठियाँ डालीं, और चिट्ठी मत्तिय्याह के नाम पर निकली, सो वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया (प्रेरितों के काम 1:21-26)।

यह आयतें प्रेरितों के पद की शर्तों को स्थापित करती हैं, जो सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में प्रेरितों की सूची के लिए अद्वितीय थी। सबसे पहले, उन्हें परोक्ष में यीशु से शिक्षा प्राप्त किया हुआ होना चाहिए था। दूसरा, उन्हों ने यीशु को उसके जी उठने के बाद देखा हुआ हो। और तीसरा, उन्हें स्वयं परमेश्वर के द्वारा इस पद पर नियुक्त

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

किया गया होना चाहिए। सभी ग्यारहों प्रेरितों ने इन सभी शर्तों को पूरा किया था क्योंकि उन्हें यीशु ने अपनी पार्थिव सेवकाई में शिक्षा दी थी, उन्होंने उसे जी उठने के बाद देखा था, और उन्हें स्वयं यीशु द्वारा नियुक्त किया गया था।

मत्तिय्याह ने इन सभी शर्तों को पूरा किया क्योंकि उसने भी यीशु से प्रभु की पार्थिव सेवकाई के दौरान शिक्षा पाई थी, उसने जी उठे हुए प्रभु को देखा था और वह परमेश्वर के द्वारा चिट्ठी डाले जाने के द्वारा परोक्ष रूप से चुना गया था।

मत्तिय्याह के बाद, केवल एक और व्यक्ति को पवित्र शास्त्र में प्रेरित के पद पर नियुक्त किया गया था: पौलुस। पौलुस को यीशु के स्वर्गारोहण होने के बाद में एक प्रेरित के रूप में चुना गया था, इस लिए कलीसिया उसकी नियुक्ति के विषय में वास्तव में सन्देह रखती है। परन्तु पवित्रशास्त्र हमें यह शिक्षा देता है कि उसने यीशु से उसके जी उठने के बाद में उससे शिक्षा पाई और उसे देखा था, और यह कि उसे स्वयं यीशु ने नियुक्त किया था।

उदाहरण के लिए, पौलुस ने जी उठे हुए प्रभु को दमिश्क के मार्ग पर देखा था, जैसा कि लूका ने प्रेरितों के काम 9:3-6 में विवरण दिया है, उसे इस पद के लिए परमेश्वर स्वयं ने नियुक्त किया था, जैसा कि हम प्रेरितों के काम 9:15 और 22:12-16 में पढ़ते हैं। सच्चाई तो यह है, कि लूका ने पौलुस की नियुक्ति के बारे में तीन स्थानों पर प्रेरितों के काम अध्याय 9, 22, और 26 में लिखा है जो उसके इस दावे को सत्यापित करते हैं कि वह वास्तव में एक सच्चा प्रेरित है।

परन्तु पौलुस ने यह भी स्वीकार किया है कि उसकी योग्यतायें कुछ हद तक असामान्य थी, क्योंकि वह यीशु के स्वर्गारोहण के बाद तक विश्वास में नहीं आया था। पौलुस उसकी अद्वितीय और विशेष प्रेरिताई के बारे में 1 कुरिन्थियों 15:8-9 में उल्लेख करता है।

> और सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूँ। क्योंकि मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूँ (1 कुरिन्थियों 15:8-9)।

नींव का समय

इन अद्वितीय शर्तों को पूरा करने के अलावा, प्रेरित इस लिए भी विशेष थे क्योंकि उन्होंने कलीसिया के जीवन की नींव डालने के समय में सेवकाई का कार्य किया। इस विशेष समय में, उन्हें यीशु मसीह की कलीसिया की स्थापना के कार्य के लिए नियुक्त किया गया था। और क्योंकि उन्होंने अपने कार्य को किया, और क्योंकि कलीसिया उसकी नींव के ऊपर दृढ़ता से खड़ी हुई थी, इस लिए उनके विशेष कार्य के लिए फिर और ज्यादा आगे के लिए आवश्यकता नहीं रही।

लूका ने कई तरह से ध्यान दिया है कि प्रेरितों ने कलीसिया की सेवा नींव के रूप से की। जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा है, प्रेरितों ने जो प्राथमिक गवाह थे जो कि सुसमाचार को यरूशलेम से लेकर यहूदिया और फिर सामरिया, फिर पृथ्वी के अन्तिम छोर तक लेकर गए। उनके सुसमाचार के द्वारा, यहूदियों में से, सामरियों की भ्रष्ट आराधना में से, और अन्यजातियों की मूर्तिपूजा से पहले मसीही विश्वासियों को प्राप्त किया गया। उनके नेतृत्व के द्वारा, इतिहास में पहली कलीसियाओं की स्थापना हुई, और उनमें उस नमूने का विकास हुआ जिसका अनुसरण आने वाली कलीसिया करेगी। इस तरह और कई अन्य तरीकों से, प्रेरितों ने समय के विशेष बिन्दु में विशेष तरीके से कार्य किया। यह समय फिर दुबारा कभी नहीं आएंगे, और इस कार्य को फिर पुन: कभी नहीं पूरा किए जाने की आवश्यकता नहीं है।

इफिसियों 2:19-20 में, पौलुस ने प्रेरितों की विशेष मूलभूत भूमिका को इस तरह से सारांशित किया है:

> और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो (इफिसियों 2:19-20)।

यीशु के अलावा, और कोई भी कोने के सिरे का पत्थर नहीं हो सकता है। और इसी तरह से, कोई और भी नेव नहीं हो सकती है, प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की और कोई भी सूची नहीं हो सकती है जो कि कलीसिया के लिए नेव का कार्य करे।

दुर्भाग्य से, हमारे दिनों में आज भी ऐसी कलीसियायें जो यह दावा करती हैं कि उनके पास अधिकारिक प्रेरित सेवकाई दे रहे हैं। तौभी, लूका ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि वास्तविक प्रेरित वे थे जो कि इस पद की शर्तों को पूरा करने की योग्यता रखते हैं, और उन्होंने विशेष तौर पर नींव डालने के समय में सेवा की जिसे कि पुन: कभी नहीं दुहराया जा सकता है। हमारे पास अभी भी प्रेरितों द्वारा रचित लेख नए नियम में मिलते हैं, परन्तु हमें इस तरह प्रेरितों को आज के समय कलीसिया में होने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

अधिकारिक

यह देख लेने के बाद कि प्रेरितों ने मसीह की गवाही को विशेष तरीके से दिया, हम अब उनकी गवाही के अधिकारिक स्वभाव को देखने जा रहे हैं। प्रेरितों के अधिकार को प्रेरितों के काम में कई तरह से देखा गया है, परन्तु सादगी को ध्यान में रखते हुए हम इनमें से केवल चार पर ही ध्यान देंगे। सबसे पहले, प्रेरितों का अधिकार उनके पद के कार्य में देखा जा सकता है। दूसरा, यह उनकी सेवकाई में परमेश्वर की आशीषों में देखा जा सकता है। तीसरा, यह उनके द्वारा आश्चर्यकर्म प्रगट करने की सामर्थ्य में प्रमाणित होता है। और चौथा, यह उस प्रकाशन में निरन्तर दिखाई देता है जो कि उन्होंने प्राप्त किया। आइए सबसे पहले हम उनके पद में उनके अधिकार के प्रदर्शन के कार्य को देखें।

कार्य

शब्द "प्रेरित" या अप्पोसटोलोस यूनानी भाषा में, मूलरुप से भेजे जाने का अर्थ रखता है। यह सामान्य तौर पर सन्देशवाहकों के लिए संकेत करता है, मध्यस्थ के लिए जो किसी मिशन को पूरा करने के लिए भेजा जाता है, और किसी एक राजदूत के लिए जो किसी अपने भेजने वाले के बदले में बोलने के लिए अधिकृत किया गया है। उदाहरण के लिए, जब यीशु ने बहत्तर मिशनरियों को परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करने के लिए लूका अध्याय 10 में भेजा, तो वे अस्थाई राजदूत थे, जिन्हें कुछ समय के लिए मसीह के अधिकार के हिस्से को प्रयोग करने के लिए नियुक्त किया था।

लूका 10:16 में, यीशु ने इन शब्दों के साथ मिशनरियों को अधिकृत किया:

> जो तुम्हारी सुनता है वह मेरी सुनता है, और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है, और जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजने वाले को तुच्छ जानता है (लूका 10:16)।

यहाँ हम देखते हैं कि मिशनरियों को मसीह के प्रतिनिधि के रूप में देखा जा रहा है। वे जो इन मिशनरियों को स्वीकार करते हैं वे मसीह की सेवा करने वाले गिने जाते हैं, और वे जो मसीह को स्वीकार करते हैं उन्हें ऐसे गिना जाता है कि उन्होंने जिसने उन्हें भेजा है उसे स्वीकार किया है, अर्थात्, पिता को।

इससे आगे, उस चर्चा का सुनिए जो कि उन लोगों के बीच में हुई जब मिशनरी लूका 10:17-19 में वापस आए:

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> वे बहत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, "हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है। उस ने उन से कहा, मैं शैतान को बिजली की नाई स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। देखो मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है, और किसी वस्तु से तुम्हें हानि न होगी" (लूका 10:17-19)।

जब उसने उन्हें उसके मिशनरी होने के लिए नियुक्त किया, तो यीशु ने अपने हिस्से के अधिकार में कुछ को उन बहत्तरों को दे दिया। इस तरह, उनका प्रस्तुतिकरण केवल मात्र प्रतीकात्मक नहीं था। इसकी बजाए, वे उसके अधिकृत मध्यस्थ थे। वे अचूक शिक्षक नहीं थे, परन्तु उनके पास वह अधिकार था जिसके द्वारा वे दुष्टात्मा को निकाल और राज्य के आगमन की घोषणा कर सकते थे।

इसी तरह से, प्रेरित अधिकारिक राजदूत थे। परन्तु मसीह के लिए उनका प्रतिनिधित्व प्रेरितों के काम की पुस्तक में अन्य शिष्यों से दो महत्वपूर्ण तरीके से भिन्न होता है। सबसे पहले, लूका की कहानियाँ यह स्पष्ट कर देती हैं कि प्रेरितों को न केवल सुसमाचार के विस्तार के मिशन के लिए नियुक्त किया गया था, बल्कि इसी के साथ वे कलीसिया में इस पद के ऊपर सदैव के लिए नियुक्त किए गए थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों को अन्य लोगों या पदों के द्वारा निकाल नहीं दिया गया था। उन्होंने मसीह द्वारा प्रत्यायोजित अधिकार को अचूकता से, सीमित समय में पूरा किया। दूसरा, प्रेरितों को मसीह की कलीसिया की स्थापना और प्रशासन से सम्बन्धित सभी विषयों में बात करने के लिए अधिकृत किया गया था। प्रेरितों के काम अध्याय 15 यरूशलेम की महासभा यह संकेत देती है कि, प्रेरितों के शब्द बड़े पैमाने पर कलीसिया में स्वीकार किए जाते थे। जैसा भी निर्णय उन्होंने दिया उसे परमेश्वर की इच्छा मान कर स्वीकार किया गया था। 2 पतरस 3:2 जिस तरह से इसे प्रेरिताई का अधिकार कह कर वर्णित करता है उसे सुनिए:

> उन बातों को... उद्धारकर्ता की उस आज्ञा को स्मरण करो, जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी (2 पतरस 3:2)।

जैसा कि पतरस ने यहाँ पर उल्लेख किया है, प्रेरितों के शब्दों को स्वीकार किया जाना था क्योंकि उन्होंने यीशु की इच्छा और शिक्षा के प्रति विश्वासयोग्य भण्डारी के तौर पर सेवा की।

प्रेरितों के कार्य का विवरण दे लेने के बाद, अब हमें उस तरीके की ओर मुड़ना चाहिए जिसमें परमेश्वर ने उनकी विशेष और अद्वितीय सेवकाई को सुसमाचार के विस्तार के लिए आशीषित किया।

आशीष

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, परमेश्वर ने प्रेरितों को प्रत्येक बार जब भी उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया तब लोगों को प्रभु में मिलाने के द्वारा आशीषित किया। जैसा कि हमने देखा है कि, पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के सन्देश ने कलीसिया में 120 लोगों की सँख्या को बढ़ा कर लगभग 3,000 लोग कर दिया। और इस तरह की आशीष लगातार प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलती है।

एक लेखक होने के नाते, लूका उसके पाठकों को यह शिक्षा देने में सावधान था कि कलीसिया में यह बाह्य, गुणात्मक वृद्धि परमेश्वर की स्वीकृति और सामर्थ्य का प्रमाण थी। एक तरह जिसे उसने इसे प्रमाणित किया वह आदरणीय फरीसी गमलीएल के शब्दों को उद्धृत करना था।

प्रेरितों के काम 5:38-39 में, गमलीएल ने इन शब्दों को प्रेरितों के बारे में यहूदी महासभा के सामने कहा:

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> इन मनुष्यों से दूर ही रहो! और उन से कुछ काम न रखो! क्योंकि यदि यह धर्म या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा। परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे; कहीं ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो (प्रेरितों के काम 5:38-39)।

इस दृष्टिकोण से देखने के द्वारा, प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों की सुसमाचार की आशीषित सेवकाई प्रमाणित होते हुए इस तरह दिखाई देती है कि पवित्र आत्मा ने उनकी सेवकाई को सशक्त और सत्यापित किया।

इसी के साथ उनके कार्य के द्वारा दिए गए प्रमाण और परमेश्वर के द्वारा उनकी सुसमाचार की सेवकाई के ऊपर गुणात्मक आशीष के द्वारा, प्रेरितों के अधिकार को भी उनकी सेवकाई के साथ प्रगट होने वाले आश्चर्यकर्मों में देखा जा सकता है।

आश्चर्यकर्म

सम्पूर्ण बाइबल में आश्चर्यकर्मों का एक मुख्य कार्य यह प्रमाणित करना है कि परमेश्वर के सन्देशवाहक सत्य को बोलें और परमेश्वर प्रदत अधिकार का प्रयोग करें। निर्गमन की पुस्तक में, मूसा के कई आश्चर्यकर्मों को फिरौन के सामने यह प्रमाणित करने के लिए प्रदर्शित किए कि उसने सच्चे परमेश्वर के बारे में बोला था। पहले और दूसरे राजा में, एलिय्याह और एलीशा ने आश्चर्यकर्मों को प्रदर्शित किया जो यह पुष्टि करते हैं कि उनकी भविष्यद्वाणियाँ और शिक्षाऐं परमेश्वर की ओर से थीं। सुसमाचारों में, यीशु ने आश्चर्यकर्मों को यह प्रमाणित करने के लिए प्रगट किया कि वह मसीह था, परमेश्वर की ओर से नियुक्त सेवक और भविष्यद्वक्ता जिसे उसके लोगों को बचाने और उन पर राज्य करने के लिए भेजा गया था।

और कुछ इसी तरह से, प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों के द्वारा आश्चर्यकर्म यह प्रमाणित करते हैं कि उनकी मसीह के प्रति दी गई गवाही सत्य थी। प्रेरितों ने प्रेरितों के काम 5:16 में बीमार को चंगा किया। उन्होंने प्रेरितों के काम 14:8 में लंगड़े को चंगा किया। उन्होंने प्रेरितों के काम 9:40 में मृतक को जीवित किया। उन्होंने प्रेरितों का काम 13:11 में दुष्ट को परेशानी में डाला। प्रेरितों के काम 12:10 में वे बन्दीगृह से बच निकले। प्रेरितों के काम 27: 44 में वे टूटते हुए जहाज में भी बच गए, और प्रेरितों के काम 28:3 में जहरीले साँप के काटने से भी बच निकले। सच्चाई तो यह है, कि उनकी सामर्थ्य इतनी ज्यादा थी कि प्रेरितों के काम 5:15 के अनुसार, पतरस की परछाई जिसे भी छू जाती थी वह चंगा हो जाता था। और प्रेरितों के काम 19:11-12 के अनुसार, जिन कपड़ों को पौलुस छूता था उनसे दुष्टआत्मायें निकल जाती थीं और बीमार चंगे हो जाते थे। इस तरह के आश्चर्यकर्म केवल परमेश्वर की ओर से ही आ सकते थे, जो यह प्रमाणित करते हैं कि प्रेरित वास्तव में उसके अधिकारिक गवाह थे।

इसी लिए पौलुस ने अपने द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों को 2 कुरिन्थियों 12:12 में इस तरीके से विवरण दिया है:

> प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों - और अद्भूत कामों - और सामर्थ्य के कामों से दिखाए गए (2 कुरिन्थियों 12:12)।

पवित्र आत्मा के द्वारा सशक्त किए जाने के द्वारा सामर्थ्य के काम एक प्रेरितों के चिन्ह थे, जो इस बात का प्रमाण था कि वह मसीह और उसके कार्य के लिए विश्वासयोग्य गवाही दे रहा था।

अब क्योंकि हमने प्रेरितों के कार्य, परमेश्वर की उनके द्वारा सुसमाचार विस्तार पर आशीष, और उनके आश्चर्यकर्मों को देख लिया है, हम अब उस प्रकाशन को देखने के लिए तैयार हैं जिसे उन्होंने उनके अधिकार के प्रमाण में प्राप्त किया।

प्रकाशन

लूका ने कई बार यह वर्णन किया है कि पवित्र आत्मा ने प्रेरितों का मार्गदर्शन करते हुए, सुसमाचार के सत्य की ओर अगुवाई दी, ताकि वे पूरी कलीसिया के लिए निर्णय लेते हुए, इसके संरचनात्मक तत्वों को आकार दे सकें जो कलीसिया को परिपक्वता की ओर अग्रसर करे। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 10 में, पतरस ने परमेश्वर की ओर से एक दर्शन को प्राप्त किया जिसमें उसे सिखाया गया कि अन्यजातियों को कलीसिया में यहूदी धर्म में परिवर्तित किए जाने की शर्तों के बिना पूरी तरह से लेने की आवश्यकता है। और प्रेरितों के काम अध्याय 16 में, पौलुस ने एक दर्शन को प्राप्त किया जिसमें उसे मकिदुनिया में सुसमाचार की घोषणा, करते हुए राज्य के सुसमाचार को विस्तृत तौर पर प्रसार करने के लिए कहा गया।

लूका के वास्तविक पाठक, और बाकी की आरम्भिक कलीसिया के लिए, प्रेरितों का अधिकारिक कार्य, सेवकाई में आशीष, सत्यापित आश्चर्यकर्म और प्रकाशन सभी उनके निर्विवाद अधिकार को निरूत्तर कर देने वाले साक्ष्य थे। और जैसा कि लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में वर्णन दिया है, कि आरम्भ की कलीसिया ने प्रेरितों की अधिकारिक गवाही और नेतृत्व के प्रति प्रतिक्रिया उनकी सारी शिक्षाओं और निर्णयों को स्वीकार और उनके अधीन होने के द्वारा किया। और इसी तरह से, आधुनिक विश्वासियों को चाहिए कि वे भी मसीह के इन अधिकारिक राजदूतों के प्रति, दोनों तरीकों से अर्थात् प्रेरितों के काम जैसी पुस्तकों में दी गई उनकी शिक्षाओं के सार और नए नियम में उनके अधिकारिक लेखों के प्रति अधीन हो जाये।

प्रेरितों की गवाही के अधिकारिक और अद्वितीय स्वभाव को ध्यान में रखते हुए, हम अब उन विविध तरीकों को देखने के लिए तैयार हैं जिनमें वे और उनका अनुसरण करने वाले इस संसार में मसीह के सुसमाचार की गवाही दे रहे थे।

विविधतायें

प्रेरितों और उनका अनुसरण करने वाले जिन्होंने मसीह की गवाही पूरे के पूरे प्रेरितों का काम की पुस्तक में दी के विविध तरीकों पर हमारी विवेचना को हम दो भागों में बाँटेंगे। सबसे पहले, हम मसीह की गवाही देने के लिए विभिन्न रणनीतियों पर ध्यान देंगे। दूसरा, हम कई तरह के विभिन्न ढाँचों का उल्लेख करेंगे जिसमें उन्होंने इस गवाही को दिया। आइए सबसे पहले विभिन्न रणनीतियों को देखें जो कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रयोग की गई हैं।

रणनीतियाँ

जबकि यहाँ पर अनगिनित तरीके हैं जिनसे हम प्रेरितों और उनके अनुयायियों द्वारा इस संसार को मसीह को प्रस्तुत करने की रणनीतियों के बारे में वर्णित कर सकते हैं, परन्तु यहाँ पर छः प्राथमिक दृष्टिकोणों को सोचना उपयोगी होगा। सबसे पहले, उन्होंने अक्सर इतिहास का उपयोग किया, विशेष करके जब जीवन, मृत्यु और यीशु मसीह के पुनरूत्थान के संदर्भ में कहने की बात आई जो कि सम्पूर्ण रोमी साम्राज्य में सूचित किए गए थे।

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 26:26 में, पौलुस ने राजा अग्रिप्पा को यह शब्द कहे:

> राजा भी जिस के सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूँ, ये बातें जानता है, और मुझे प्रतीति है, कि इन बातों में से कोई उस से छिपी नहीं, क्योंकि यह घटना किसी कोने में नहीं हुई (प्रेरितों के काम 26:26)।

इस संदर्भ में, पौलुस की मुख्य बात यह थी कि वे मौलिक तथ्य जिसे उसने और कलीसिया ने घोषित किया था वे पूरे के पूरे प्राचीन संसार को मालूम थे। इस तरह के ऐतिहासिक घटनाओं का उपयोग करना एक सामान्य रणनीति थी जिसे प्रेरितों ने प्रयोग किया जब वे अविश्वासियों को गवाही दे रहे थे।

दूसरा, प्रेरितों ने लगातार पवित्र शास्त्र का उपयोग सुसमाचार के विस्तार की सहायता के लिए किया। जब यहूदी श्रोताओं को गवाही दी जा रही थी, तो प्रेरित अक्सर पुराने नियम का उपयोग करते थे। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 3:22 में, पतरस ने मूसा के शब्दों को यहूदियों के लिए यह प्रमाणित करने के लिए उपयोग किया कि यीशु ही लम्बे-समय से प्रतीक्षा किया जाने वाला मसीह था। और प्रेरितों के काम 23:6 में, पौलुस ने मृतकों के पुनरूत्थान के यहूदी मान्यता का उपयोग किया जो कि पुराने नियम के पवित्र शास्त्र से निकलता है।

तीसरा, जब अन्यजाति श्रोताओं को गवाही दी जा रही थी, तो प्रेरितों ने परमेश्वर के प्रकृति में दिए हुए प्रकाशन और उन सच्ची मान्यताओं का उपयोग किया जो कि मूर्तिपूजक विचारधारा में पाई जाती थी। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 17:24-27, पौलुस परमेश्वर और मनुष्य के इतिहास के लिए मूर्तिपूजकों के सामान्य दृष्टिकोणों का प्रयोग अथेने के लोगों को सुसमाचार की घोषणा के लिए आरम्भिक बिन्दु के रूप में किया। उसने वहाँ पर क्या कहा उसे सुनिए:

> जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बाँधा है। कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाएँ तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं (प्रेरितों के काम 17:24-27)।

जिस दृष्टिकोण को पौलुस ने यह प्रस्तुत किया है वो न केवल मसीही विश्वासियों और यहूदियों के द्वारा मान्य थे बरन् वे मूर्तिपूजकों को भी मान्य थे। सच्चाई तो यह है कि अथेने में अरियुपगुस पर भी यही संदेश दिया, तौभी उसने मूर्तिपूजक साहित्य की ओर संकेत किया। जो कुछ उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक 17:28 में कहा उसे सुनिए:

> क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते- फिरते, और स्थिर रहते हैं, जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, "कि हम तो उसी के वंश भी हैं" (प्रेरितों के काम 17:28)।

यहाँ पर पौलुस ने यूनानी काव्य साहित्य का उपयोग मसीहियत की गवाही देने के लिए उपयोग किया जब वह अथेने में मसीह के लिए गवाही दे रहा था।

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

चौथा, प्रेरितों ने जब वे मसीह को दूसरों के मध्य प्रस्तुत कर रहे थे तो अक्सर व्यक्तिगत् अनुभवों का उपयोग किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका ने कई बार इसका वर्णन किया है कि पौलुस ने इस तरीके का उपयोग किया। उदाहरण के लिए, पौलुस ने उसके नाटकीय मन परिवर्तन को जो कि दमिश्क के मार्ग में हुआ था को उपयोग किया, जिसे प्रेरितों के काम अध्याय 9 में वर्णित किया गया है। उसने प्रेरितों के काम 22 अध्याय में यरूशलेम में यहूदियों की भीड़ के आगे अपने अनुभव को स्मरण किया, और उसने इसका विवरण राजा अग्रिप्पा को प्रेरितों के काम अध्याय 26 में दिया।

पाँचवाँ, प्रेरितों ने कई चिन्ह और आश्चर्यकर्मों को जिस सत्य के सुसमाचार का वे प्रचार कर रहे थे को प्रमाणित करने के लिए किया। जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा, प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रेरितों के द्वारा प्रगट किए हुए आश्चर्यकर्मों से भरी पड़ी है। जब कभी भी आत्मा ने प्रेरितों को आश्चर्यकर्म करने के लिए सामर्थ्य दी, तो उसने ऐसा यीशु मसीह की गवाही देने में सहायता करने के लिए किया।

छठा, प्रेरितों ने यीशु के प्रति गवाही उनकी अटल विश्वासयोग्यता के द्वारा दी। उन्होंने निरन्तर लोगों का ध्यान मसीह से प्राप्त ध्यानाकर्षण के द्वारा खींचने में उपयोग किया, और उन्होंने उसका अनुसरण करने की बुलाहट को इन्कार कर दिया यहाँ तक कि जब वे सताए गए या फिर जब उन्हें धमकाया गया। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 14 में जब लुस्त्रा के लोगों ने पौलुस और बरनबास की पूजा करनी चाही, तो पौलुस ने जोर दिया कि वह तो केवल एक मनुष्य था, और उसने लोगों का ध्यान परमेश्वर की ओर लगाया। और प्रेरितों के काम अध्याय 4 में, जब यहूदी महासभा ने प्रेरितों को धमकाया और सुसमाचार प्रचार करने से रोकने के लिए दोषी ठहराया, तो प्रेरितों ने चुप रहने से मना कर दिया। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 5:28-29 में पढ़ते हैं:

> क्या हम ने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? [महा याजक] ने कहा। तव पतरस और. और प्रेरितों ने उत्तर दिया, "कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।" (प्रेरितों के काम 5:28-29)।

प्रेरितों ने विभिन्न तरह की रणनीतियों का उपयोग किया जब उन्होंने सुसमाचार प्रचार का कार्य किया। और उनकी शिक्षाओं और उदाहरणों के द्वारा, उन्होंने आरम्भ की कलीसिया को भी ऐसा करने के लिए शिक्षित किया। लूका के द्वारा वर्णित यह चित्र प्रत्येक युग के मसीही विश्वासियों को उत्साहित करनी चाहिए ताकि वे उन सभी रणनीतियों की खोज कर लें जिन्हें परमेश्वर चाहता है कि वे उसका अनुसरण करें जब हम सुसमाचार के लिए उसकी गवाही देते हैं।

इन सभी विभिन्न रणनीतियों के अलावा प्रेरित मसीह के लिए गवाही देते थे, हमें उन विभिन्न ढाँचों पर ध्यान देना चाहिए जिनमें वे मसीह के बदले में गवाही देते थे।

ढाँचे

ऐसे कई तरीके हैं जिनमें हम विभिन्न ढाँचों को सारांशित कर सकते हैं जिनमें प्रेरितों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में सुसमाचार के लिए गवाही दी। परन्तु हमारी अपनी आसानी के कारण, हम इन समयावधियों को चार मौलिक श्रेणियों में एकत्र कर देंगे। सबसे पहले, वहाँ पर सार्वजनिक भाषण थे। यहाँ पर हमारे पास वे घटनाएँ हैं जिसमें प्रेरितों ने एक बड़े समूह के लोगों को सार्वजनिक ढाँचे में रहकर भाषण दिया, चाहे यह सन्देश हो, या फिर मंडन भाषण हो, या फिर किसी अन्य तरह का व्यक्तव्य हो।

इस तरह के प्रस्तुतिकरण में, प्रेरितों ने बहुत ही ज्यादा सावधानी से श्रोताओं के अनुसार अपने शब्दों का चुनाव करके उन्हें भाषण दिया। जैसा कि हमने पहले ही इस अध्याय में देख लिया है, वे यहूदियों से एक तरीके से और अन्यजातियों से दूसरे तरीके से बोले।

दूसरा, प्रेरितों ने संवाद या वाद विवाद के संदर्भ में गवाही दी। इस तरह के ढाँचे में, लोगों को प्रतिवाद करने के लिए निमन्त्रण दिया जाता है, और प्रेरितों से यह आशा की जाती थी कि वे सुसमाचार का मंडन करें। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 19 में, पौलुस ने इफिसुस में तिरनुस नामक स्थान के सभाघर में वाद- विवाद किया, जहाँ पर व्यक्तव्य कला और नए विचारों को लोगों के आगे जाँचा जाता था।

तीसरा, प्रेरितों के काम में प्रेरितों और अन्य जिन्होंने उनका अनुसरण किया ने अक्सर पूरे घराने में गवाही दी। प्राचीन संसार में, घरानों में विशेष तौर पर माता पिता और उनके बच्चों से ज्यादा लोग सम्मिलित होते थे। वहाँ पर अक्सर सम्बन्धी, मित्र और उस घराने के सेवकगण होते थे। इस लिए, जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में घरानों के बारे में पढ़ते हैं, तो हमें यह कल्पना करनी चाहिए कि उनमें उनके सम्बन्धी भी होते थे जैसे बच्चे, दादा दादी, चाचा और चाची, और इसी के साथ काम करने वाले कर्मचारी और सेवकगण, और कई घरानों में तो गुलाम भी सम्मिलित थे। पूरे घराने के समूह मिलकर लगभग औसतन 15 से 20 लोगों को मिलाकर होता था। हम प्रेरितों के उदाहरणों को पाते हैं कि वे प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई स्थानों पर घरानों को गवाही दे रहे थे, जैसा कि अध्याय 10 में, जहाँ पतरस ने कुरनेलियुस के घराने को गवाही दी; और अध्याय 16 में जहाँ पर पौलुस ने लुदिया और फिलिप्पी के बन्दीगृह के दरोगा को गवाही दी।

चौथा, प्रेरितों के काम में गवाही देने के तरीके में व्यक्तिगत् सुसमाचार प्रचार के उदाहरण भी हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्याय 25 में, पौलुस ने राजा अग्रिप्पा से व्यक्तिगत् तौर पर बातचीत करते हुए अपने शब्दों को विशेष तौर पर अग्रिप्पा के ज्ञान और अनुभव से मिलाया।

संक्षेप में, प्रेरितों ने स्वयं को केवल एक निश्चित तरीके से ही या फिर एक निश्चित ढाँचे में ही गवाही देने तक सीमित नहीं रखा। जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक का सर्वेक्षण करते हैं, तो हम उन्हें प्रत्येक अवसर का लाभ उठाते हुए पाते हैं, जिसमें वे सुसमाचार का प्रचार इस तरीकों से कर रहे हैं जो कि प्रत्येक श्रोता के लिए उचित लगता हो। ऐसा करने के द्वारा, प्रेरितों ने हमारे लिए एक नमूने को प्रदान किया है, जो हमें सुसमाचार के उन तत्वों के ऊपर जोर देने के लिए शिक्षा देता है जिनके द्वारा हम अपने श्रोताओं के साथ ज्यादा शक्ति के साथ तर्क वितर्क करते हुए उन पर जोर दे सकते हैं, और उन विशिष्ट तरीके का पता लगा सकते हैं जो कि प्रत्येक अविश्वासी के जीवन के साथ सम्बन्धित होता है।

कलीसिया

पवित्र आत्मा और प्रेरितों के विषयों के ऊपर देख लेने के बाद, हम अब अपने प्रेरितों के काम के तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं: जो कि कलीसिया है जिसे कि प्रेरितों ने स्थापित किया।

हम कलीसिया के विषय की जानकारी दो तरीकों से लेंगे। पहला, हम कलीसिया की आवश्यकता को देखेंगे। और दूसरा, हम प्रेरितों के द्वारा निरन्तर कार्य चलता रहे के लिए की गई तैयारी को देखेंगे। आइए सबसे पहले हम कलीसिया की आवश्यकता को देखें।

आवश्यकता

मसीह ने उसकी कलीसिया को निर्मित करने के लिए प्रेरितों को अधिकृत किया। क्योंः प्रेरित जानते थे कि वे थोड़े से ही लोग हैं जो कि मसीह के सुसमाचार को पूरे संसार में स्वयं के बल पर नहीं ले जा सकते हैं; उन्हें प्रत्येक स्थान पर राज्य के सुसमाचार प्रचार की घोषणा के लिए गवाहों की सेना की आवश्यकता थी।

हम उन दो तथ्यों की ओर देखेंगे जिसने कलीसिया को प्रेरितों के मिशन को स्थापित करने के लिए आवश्यक बना दिया। पहला, हम प्रेरितों की भौतिक सीमाओं को देखेंगे, वे सच्चाई कि वे भौतिक तौर पर जिस कार्य को उन्हें करने के लिए दिया गया था को नहीं कर सकते थे। दूसरा, हम उनके लौकिक सीमाओं को देखेंगे, वे सच्चाई कि वे सामान्य मानवी जीवन को यापन करेंगे और भविष्य की पीढ़ियों के लिए गवाही देने के लिए असमर्थ होंगे। आइए प्रेरितों की भौतिक सीमाओं से आरम्भ करें।

भौतिक सीमायें

जैसा कि हमने पहले ही देख लिया है, कि प्रेरितों का कार्य मसीह की गवाही सुसमाचार की घोषणा के द्वारा देने के लिए था। परन्तु वे स्वयं से पूरे संसार के लिए "जीवित पत्रियाँ" बन कर नहीं दे सकते थे। इस समस्या के समाधान के लिए, प्रेरितों ने कलीसिया को प्रामाणिक गवाह होने का दायित्व सौंपा। जैसे जैसे लोग कलीसिया में प्रेरितों के सुसमाचार के द्वारा जोड़ दिये जाते थे, ये विश्वासी अपने आप में ही "जीवित पत्रियाँ" बन गए। उन्होंने सुसमाचार को अपने में यापन किया, परिणामस्वरूप अपने परिवारों और पड़ोसियों के लिए यीशु के गवाह बन गए। उनमें से कुछ तो यहाँ तक कि मिशनरी और सुसमाचार प्रचारक बन गए। इस तरह से, प्रेरितों ने प्रत्येक पीढ़ी में प्रामाणिक सुसमाचार प्रचार के लिए एक स्वयं-को-प्रदर्शित करता हुआ नमूना प्रदान किया, जिसमें अब कलीसिया स्वयं ही सबसे ज्यादा कार्य कर रही है। यह सुनिश्चित है, कि कलीसिया उसी अधिकार और प्रमाणित आश्चर्यकर्मों के द्वारा सुसमाचार का प्रचार करने के योग्य नहीं हुई जो कि प्रेरितों के प्रचार के साथ में प्रगट हुए। परन्तु फिर भी, पवित्र आत्मा कलीसिया के जीवन और वचन की प्रमाणिक गवाही के द्वारा कार्य करने से प्रसन्न हुआ था, और काफी सारे नए विश्वासी इस तरीके से इसमे आ जुड़े थे।

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 11:19-21 को सुनिए, जो यह कहता है कि विश्वासी सताव के कारण बिखर गए:

> [वे] फिरते फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुँचे; परन्तु उन में से कितने... अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमचार की बातें सुनाने लगे। और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे (प्रेरितों के काम 11:19-21)।

प्रेरितों की भौतिक सीमाओं की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हमें लौकिक सीमाओं के ऊपर ध्यान देना चाहिए जो कि उनके नश्वरता होने के द्वारा उत्पन्न हुई थी।

लौकिक सीमायें

प्रेरित इस बात से आश्वस्त थे कि यीशु वापस आएगा, परन्तु वे नहीं जानते थे कि कब। जिस समय राजा हेरोदेस ने प्रेरित याकूब को प्रेरितों के काम अध्याय 12 में मारा, तो यह स्पष्ट था कि कम से कम कुछ प्रेरित उस समय तक जीवित नहीं रहेंगे जब तक यीशु पुन: वापस नहीं आ जाता। इस लिए प्रेरितों ने कलीसिया को प्रत्यक्ष रूप से प्रेरिताई देखरेख में सुसमाचार प्रचार के लिए, परन्तु साथ ही साथ प्रेरितों की मृत्यु के बाद कलीसिया के निर्माण के कार्य के चलते रहने के लिए भी इसे प्रशिक्षित किया।

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

उदाहरण के लिए, पौलुस के इफिसियों के प्राचीनों को प्रेरितों के काम 20:25-28 में कहे हुए शब्दों को सुनिए:

> और अब देखो, मैं जानता हूँ, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह फिर न देखोगे... इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है (प्रेरितों के काम 20:25-28)।

पौलुस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कलीसिया निरन्तर सुसमाचार प्रचार के लिए प्रामाणिक तरीके से मसीह के ऊपर निर्भर रहेगी और विश्वासियों को परिपक्वता तक लेकर आएगी। इस लिए, उसने यह सुनिश्चित किया कि इसके अगुवों को उनकी मृत्यु के बाद निरन्तर सेवकाई के लिए तैयार रहना चाहिए। प्रेरितों की भौतिक और लौकिक सीमाओं के कारण, कलीसिया प्रेरितों की छोटी-अवधि और लम्बी-अवधि की रणनीतियों के लिए परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए केन्द्र थी।

अब क्योंकि हमने प्रामाणिक गवाही के लिए कलीसिया की आवश्यकता को देख लिया है, इस लिए हमें अब प्रेरितों द्वारा कलीसिया की तैयारी की ओर मुड़ना चाहिए।

तैयारी

प्रेरितों ने कलीसिया को परमेश्वर के राज्य के विस्तार के मिशन के लिए कई तरीके तैयार किये। परन्तु समय की कमी के कारण हम स्वयं को तीन कारणों तक सीमित रखेंगे: पहला, हम इस सच्चाई के ऊपर देखेंगे कि प्रेरितों ने कलीसिया को निर्देश दिया कि वह प्रेरितों की शिक्षा के प्रति विश्वासयोग्य रहे, जिसमें उनकी यीशु के प्रति विश्वासयोग्य गवाही सम्मिलित थी। दूसरा, हम प्रेरितों के द्वारा कलीसिया में अधिकारियों के पद को प्रदान करने के बारे में पता लगाएंगे, जैसे प्राचीन और डीकन। और तीसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे प्रेरितों ने कलीसिया को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार किया जो की शीघ्र आने वाली थी। हम सबसे पहले शिक्षा की ओर मुड़ेंगे जिसे प्रेरितों ने कलीसिया को दिया।

शिक्षायें

इफिसियों अध्याय 2 में, प्रेरित पौलुस ने कलीसिया को एक भवन कह कर विवरण दिया है, जो कि मसीह जो सिरे का पत्थर है, और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव के ऊपर निर्मित है। इफिसियों 2:19-20 में उसके शब्दों को सुनिए:

> इसलिए तुम अब...पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए हो और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप है, बनाए गए हो (इफिसियों 2:19-20)।

यहाँ पर ध्यान दीजिए कि पौलुस के मन में केवल मात्र यही बात नहीं है कि प्रेरित ही कलीसिया के आरम्भिक अगुवे थे, परन्तु उनकी शिक्षायें भी कलीसिया के लिए नींव के समान थी, जो कि कलीसिया के विश्वास का आधार थी।

इफिसियों 3:4-6 में, पौलुस नींव की भूमिका को अपनी शिक्षा के द्वारा इस तरह से वर्णन करता है:

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ। जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है (इफिसियों 3:4-6)।

इसी लिए लूका प्रेरितों के काम की पुस्तक में इन तथ्यों के ऊपर बड़ी सावधानी से ज्यादा जोर देता है कि कलीसिया ने स्वयं को प्रेरितों की शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया था। जैसा कि प्रेरितों के काम 2:42 में वर्णित किया हुआ है:

> वे [अर्थात् विश्वासी] प्रेरितों से शिक्षा पाने में लौलीन रहे (प्रेरितों के काम 2:42)।

लूका चाहता था कि उसके पाठक यह जाने कि मसीह के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए, उसके राज्य के विस्तार को फैलाने की हमारी कोशिश के लिए परमेश्वर की आशीष के लिए, कलीसिया को न केवल यीशु जो कि सिरे का पत्थर है के ऊपर निर्मित होना चाहिए, परन्तु आरम्भ की कलीसिया के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव के ऊपर भी निर्भर होना चाहिए। प्रेरितों ने आधिकारिक और विश्वसनीय तौर पर यीशु की शिक्षा और कार्य को उन तक पहुँचाया था। इस लिए, प्रत्येक युग के विश्वासी को चाहिए कि वे प्रेरितों की शिक्षा को संभाले, घोषित करे और इसी के द्वारा जीवन यापन करे।

यह यहाँ तक कि मसीह की आज की कलीसिया के लिए भी सत्य है। सबसे स्पष्ट तरीका यह है कि यह हमारे लिए आज भी सत्य है कि नया नियम स्वयं मौलिक तौर पर प्रेरितों के द्वारा लिखा गया। और वे पुस्तकें जो कि प्रेरितों के द्वारा नहीं लिखी गई हैं, जैसे कि प्रेरितों के काम की पुस्तक, ने प्रेरितीय सहमति को प्राप्त किया है। जैसा कि मसीह की आज की कलीसिया है, हम अपने जीवनों को नए नियम के लेखों के ऊपर निर्मित करते हैं जो कि प्रेरितों की शिक्षाओं का सार है।

यह देख लेने के बाद की प्रेरितों ने कलीसिया को उनकी शिक्षाओं के प्रति विश्वासयोग्य रहने का निर्देश देने के द्वारा तैयार किया, अब हम इस बात की ओर ध्यान करने के लिए तैयार हैं कि उन्होंने कैसे कलीसिया को तैयार करने के लिए अधिकारियों को नेतृत्व देने और कलीसिया की सेवा करने के लिए तैयार किया जब कलीसिया नए स्थानों और नई पीढ़ियों में विस्तार करती चली गई।

अधिकारीगण

जैसा कि हमने देखा है, कि प्रेरितों ने भौतिक और लौकिक सीमाओं का सामना किया जिसने उन्हें उनके अपने मिशन को पूरा करने के लिए बाधा पहुँचाई। और इस समस्या के समाधान का आंशिक हिस्सा कलीसिया में अतिरिक्त अधिकारियों की नियुक्ति करना था।

यहाँ हमें रूक कर यह कहना चाहिए कि विभिन्न मसीह परम्पराओं ने यह समझा है कि आरम्भ की कलीसिया में विभिन्न तरह का शासन और अधिकारीगण थे। कलीसिया की कुछ शाखायें इन तीन पदों के होने को स्वीकार करती हैं: बिशप, प्राचीन और डीकन। अन्य केवल दो ही पदों को स्वीकार करते हैं: प्राचीन और डीकन। फिर भी कुछ अन्य हैं जो कि प्रेरितों, मिशनरी, प्रचारकों और अन्यों को सम्मिलित करते हैं।

कलीसिया में उचित शासन का प्रश्न हमारे इस अध्याय के लक्ष्य से परे है, परन्तु हम सामान्य बात के ऊपर जोर देना चाहते हैं कि प्रेरितों ने कलीसिया में अतिरिक्त अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त किया जो कि परमेश्वर के मिशन को आगे की ओर ले कर जाएंगे।

सच्चाई तो यह है, कि प्रेरितों ने अतिरिक्त अधिकारियों को बहुत जल्द ही नियुक्त करना आरम्भ कर दिया था क्योंकि उन्होंने लगभग एकदम यह पहचान लिया था कि वे स्वयं से उन सेवकाइयों को अभी संभाल नहीं सकते थे जो कि यरूशलेम की स्थानीय कलीसिया के साथ सम्बन्धित थीं। हम इसे प्रेरितों के काम अध्याय 6 में बहुत ही स्पष्टता से देखते हैं, जहाँ पर प्रेरितों ने डीकन के पद की स्थापना यह पुष्टि करने के लिए की कि कलीसिया उसके सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य हो सके। इस घटना में, प्रेरितों ने कलीसिया को निर्देश दिया कि वे अपने में से कुछ जिम्मेदार लोगों को प्रतिदिन का भोजन वितरण करने के लिए चुन ले।

सुनिए किस तरह से प्रेरितों ने प्रेरितों का काम 6:3-6 में इस समस्या का निपटारा किया:

> [प्रेरितों ने यह कहा], "इसलिये हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरूषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।"... [कलीसिया ने], इन लोगों को चुन लिया। और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्हों ने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे (प्रेरितों का काम 6:3-6)।

प्रेरितों ने प्राचीनों को नियुक्त किया, जिन्हें अक्सर पास्टर कहा जाता है, ताकि वे देखभाल करें और कलीसिया की विभिन्न स्थानीय कलीसियाओं को नेतृत्व प्रदान करें। उदाहरण के लिए, पौलुस की मिशनरी यात्रा के बीच में, प्रेरितों ने विशेष तौर पर नए विश्वासियों को कलीसियाओं में एकत्र किया, और अगुवों की नियुक्ति की जो कि जब वे इन्हें छोड दें तो कलीसिया की देखभाल का दायित्व ले सकें।

हम प्रेरितों के काम 14:23 में इसका एक उदाहरण देखते हैं, जहाँ पर लूका ने इस तरह से वर्णन किया है:

> और पौलुस और बरनबास ने हर एक कलीसिया में उन के लिये प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके, उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्हों ने विश्वास किया था (प्रेरितों के काम 14:23)।

सच्चाई तो यह है, कि प्रेरित कलीसिया के लिए प्राचीनों को तैयार करने के लिए इतनी ज्यादा इच्छा रखते थे कि उन्होंने अपने साथ प्राचीनों को इसकी अगुवाई करने के लिए उत्साहित किया यहाँ तक जब प्रेरित अस्तित्व में ही थे। इसका सबसे प्रमुख उदाहरण प्रेरितों के काम की यरूशलेम की महासभा में मिलता है जिसे की अन्यजातियों से सम्बन्धित प्रश्न के लिए आयोजित किया गया था – यह प्रश्न की कैसे अन्यजातियों को कलीसिया में पूरी रीति से लेना है। महासभा को प्रेरितों और प्राचीनों दोनों के द्वारा संचालित किया गया था। प्रेरितों का काम अध्याय 15 में, जहाँ एक घटना को वर्णित किया गया है, प्रेरितों और प्राचीनों दोनों का उल्लेख कम से कम पाँच बार कलीसिया के अगुवों के रूप में इकट्ठा किया गया है।

सुनिए प्रेरितों का काम 15:1-2 अध्याय कैसे आरम्भ होता है:

> फिर कितने लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे: "कि यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।" जब पौलुस और बरनबास का उन से बहुत झगड़ा और वाद-विवाद हुआ तो यह ठहराया गया, कि पौलुस और बरनबास, और हम में से कितने और व्यक्ति इस बात के विषय में यरूशलेम को प्रेरितों और प्राचीनों के पास जाएँ (प्रेरितों का काम 15:1-2)।

पौलुस और अन्यों को प्रेरितों और प्राचीनों से परामर्श लेने के लिए भेजा गया। हम ऐसे ही वाक्यांशों को इसी अध्याय की इन आयातों 4, 6, 22 और 23 में पाते हैं।

पूरे प्रेरितों के काम की पुस्तक में, प्रेरितों ने इन अधिकारिगणों को कलीसिया का काम करने की बुलाहट दी ताकि वे परमेश्वर के प्रतिज्ञात् मसीह के राज्य के मिशन को आगे ले कर चलें। हम इसे प्रेरितों के काम अध्याय 20 में इफिसियों के प्राचीनों को दिए गए पौलुस के कथन में देखते हैं। हम इसे याकूब जैसे प्राचीनों की मुख्य भूमिका में देखते हैं, जो कि ऐसा जान पड़ता है कि यरूशलेम की कलीसिया की अगुवाई प्रेरितों के काम अध्याय 15 और 21 में कर रहा था।

सुनिए उस तरीके को जिसमें पौलुस ने तीतुस 1:5 में इन अधिकारियों की नियुक्ति के बारे में लिखा है:

> मैं तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे (तीतुस 1:5)।

पौलुस ने नौजवान पास्टर को निर्देश दिया कि वह जो कुछ पौलुस बिना पूरा किए हुए छोड़ कर गया था उसे वह पूरा करे। ऐसा कहने का अर्थ यह है, कि प्राचीन तीतुस को वे सब कार्य पूरे करने थे जिन्हें प्रेरित पौलुस ने आरम्भ किया था; उसे निरन्तर परमेश्वर के राज्य की सुसमाचार की प्रेरितीय मिशन को जारी रखना था।

पौलुस और अन्य प्रेरितों ने इन अधिकारियों की नियुक्ति इस लिए की थी ताकि वे उनसे सेवकाई के कार्य को ले लें। परमेश्वर ने कभी भी यह नहीं ठाना कि प्रेरित ही सब कुछ स्वयं करें। उसने यही ठाना कि प्रेरित उसकी कलीसिया को स्थापित करें। परन्तु उसने यह भी चाहा कि वे अन्यों को प्रशिक्षित करें जो कि प्रेरितों से कलीसिया में नेतृत्व को ले लें, ऐसे अधिकारी जो कि प्रेरितों की नींव पर कलीसिया को निरन्तर निर्मित करते हुए, उन समयों और क्षेत्रों में परमेश्वर के राज्य का विस्तार करें जहाँ पर प्रेरित कभी भी नहीं पहुँच सकते हैं।

अभी तक हमने यह देखा कि प्रेरितों ने कलीसिया को यीशु की शिक्षाओं और कार्य के बारे में सिखाया और मसीह के मिशन को पूरा करने के लिए अतिरिक्त अधिकारियों को प्रशिक्षित किया। इस स्थान पर, अब हम उस तरीके के बारे में बोलने के लिए तैयार हैं जिसमें प्रेरितों ने कलीसिया को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार किया जो कि शीघ्र आने वाली थी जब कलीसिया आगे की ओर बढ़ती थी।

कठिनाइयाँ

लूका ने प्रेरितों के काम को कठिनाई, खतरे और उत्पीड़न से भरा हुआ था के रूप में वर्णन किया है। उन्हें अक्सर पीटा जाता और गिरफ्तार कर लिया जाता था। प्रेरित याकूब को राजा हेरोदेस ने मार डाला था। और प्रेरित जानते थे कि जो कुछ उनके स्वयं के जीवन में सत्य था वह अन्य विश्वासियों के जीवन में भी सत्य था।

एक बहुत ही रोचक प्रकरण में, पौलुस को लुस्त्रा नामक शहर में क्रोधित अविश्वसियों के द्वारा पत्थरवाह किया गया और मरा हुआ समझ कर छोड़ दिया गया। परन्तु अगले ही दिन, वह निकट के दिरबे नामक शहर में बच कर भाग गया। परन्तु शीघ्र ही, वह लुस्त्रा और अन्य शहरों में वापस आया और विश्वासियों को उत्साहित किया।

यह पौलुस के जीवन को मारने की कोशिश के संदर्भ में था कि लूका ने प्रेरितों के काम 14:21-22 में इन शब्दों को वर्णित किया है:

> [पौलुस और बरनबास] लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए। और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे, "कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा" (प्रेरितों के काम 14:21-22)।

प्रेरित चाहते थे कि कलीसिया यह समझ ले कि वह सताव और कठिनाइयों का सामना करेगी। कुछ को यहाँ तक कि उनके विश्वास के कारण मार डाला जाएगा। परन्तु परमेश्वर के राज्य का लक्ष्य इससे ज्यादा मूल्यवान था। और इसी लिए, कलीसिया को चाहिए कि वह मसीह के प्रति अटल विश्वास में बनी रहे।

जिस तरह से प्रेरितों ने कलीसिया को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार किया इसको पौलुस के द्वारा इफिसियों के प्राचीनों को दिए हुए उसके भाषण में भी देखा जा सकता है। प्रेरितों के काम अध्याय 20 में, पौलुस ने उनसे कहा कि हो सकता है कि वह उन्हें पुन: न देखे। उसने उसने कहा कि वह यरूशलेम जा रहा था, जहाँ पर हो सकता है कि उसे कैद कर लिया जाए और हो सकता है कि उसे मार डाला जाए। अपने जीवन के प्रति उसके इस गंभीर दृष्टिकोण के संदर्भ में, पौलुस ने इफिसियो की कलीसिया को उनकी अपनी कठिनाइयों का सामना करने के लिए चेतावनी और उत्साह से भरे हुए उपदेश दिए।

प्रेरितों के काम 20:28-31 में, उसने इफिसियों के प्राचीनों से इन शब्दों में बोला:

> इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो; जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है। मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिये जागते रहो; और स्मरण करो; कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा (प्रेरितों के काम 20:28-31)।

बहुत सारे प्रेरितों ने इसी तरह की बातों को कलीसियाओं को लिखे गए अपने पत्रों में लिखी हैं। पतरस, यूहन्ना और पौलुस प्रत्येक ने कलीसिया को विश्वास के विरूद्ध आने वाले शत्रुओं से सावधान रहने, पवित्र शास्त्र और उनकी शिक्षाओं पर निर्भर रहने, और मसीह के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए लिखा है।

इन सबमें, प्रेरितों की चाहत यही थी कि वे कलीसिया को निरूत्साहित न करें। इसकी बजाए, वे कलीसियाओं को मसीह में भरोसा करने के लिए तैयार करें कि वे कठिनाइयों का सामना करें, पवित्र आत्मा के अनुग्रहों और वरदानों के ऊपर निर्भर रहें, और निरन्तर परमेश्वर के मिशन को पूरा करने के लिए इसके पीछे चलते रहें।

कलीसिया को प्रेरितों की गवाही और शिक्षा के ऊपर निर्मित कर देने के द्वारा, कलीसिया में अधिकारियों की स्थापना करने के द्वारा, कलीसिया को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार करने के द्वारा, और अन्य कई तरीकों से, प्रेरितों ने यह पुष्टि की कि कलीसिया प्रत्येक स्थान और युग में परमेश्वर के राज्य के मिशन का विस्तार करने के लिए सक्षम हो जाए।

सारांश

इस अध्याय में हमने तीन प्रमुख विषयों की खोज की जो कि प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में गूँथे हुए हैं। हमने पवित्र आत्मा की गतिविधियों और वरदान देने के ऊपर ध्यान दिया है। हमने मसीह के विशिष्ट आधिकारिक गवाहों के रूप में प्रेरितों के महत्व पर चर्चा की है। और हमने यह देखा कि कैसे प्रेरितों ने उनके लिए कलीसिया की स्थापना के निर्धारित कार्य को पूरा किया।

प्रेरितों के काम की पुस्तक इतिहास और धर्मविज्ञान का उल्लेखनीय कार्य है। जब लूका ने थियुफिलुस और आरम्भ की कलीसिया को इसे लिखा, तो उसने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में पृथ्वी के छोर तक उनकी गवाही के द्वारा परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए सुसमाचार प्रचार के महत्व पर प्रकाश डाला है। जब हम इन अध्यायों को हमारे आज के जीवनों में लागू करते हैं, तो हमें स्वयं को परमेश्वर के राज्य के लिए समर्पित, उस दिन की ओर देखते हुए करना चाहिए कि मसीह एक दिन अनन्त राज्य की पूर्णता के लिए पुन: वापस आएगा।

For videos, study guides and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.